قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ

पारा - 27

eParah

قَالَ	فَمَا	خَطْبُكُمْ	اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ﴿31﴾	قَالُوْٓا	اِنَّآ	اُرْسِلْنَآ
उसने कहा	तो क्या	मामला है तुम्हारा	ऐ भेजे जाने वालो (फ़रिश्तो)	उन्होंने कहा	बेशक हम	भेजे गए हम

اِلٰى قَوْمٍ	مُّجْرِمِيْنَ ﴿32﴾ لا	لِنُرْسِلَ	عَلَيْهِمْ	حِجَارَةً	مِّنْ طِيْنٍ ﴿33﴾ لا
तरफ़ उन लोगों के	जो मुजरिम हैं	ताकि हम भेजें	उन पर	पत्थर	मिट्टी के

مُّسَوَّمَةً	عِنْدَ رَبِّكَ	لِلْمُسْرِفِيْنَ ﴿34﴾	فَاَخْرَجْنَا	مَنْ	كَانَ
निशानज़दा	तेरे रब के यहां से	हद से बढ़ने वालों के लिए	तो निकाल लिया हमने	जो कोई	था

فِيْهَا	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿35﴾ ج	فَمَا	وَجَدْنَا	فِيْهَا	غَيْرَ	بَيْتٍ
उसमें	मोमिनों में से	तो ना	पाया हमने	उसमें	सिवाए	एक घर के

مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿36﴾ ج	وَتَرَكْنَا	فِيْهَآ	اٰيَةً	لِّلَّذِيْنَ	يَخَافُوْنَ
मुसलमानों में से	और छोड़ दी हमने	उसमें	एक निशानी	उन लोगों के लिए जो	डरते हैं

الْعَذَابَ	الْاَلِيْمَ ﴿37﴾ ط	وَفِيْ مُوْسٰٓى	اِذْ	اَرْسَلْنٰهُ	اِلٰى فِرْعَوْنَ
अज़ाब	दर्दनाक से	और मूसा में (निशानी है)	जब	भेजा हमने उसे	तरफ़ फ़िरऔन के

بِسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ﴿38﴾	فَتَوَلّٰى	بِرُكْنِهٖ	وَقَالَ	سٰحِرٌ	اَوْ
साथ दलील	खुली के	तो उसने मुंह मोड़ लिया	बवजह अपनी क़ुव्वत के	और वो कहने लगा	जादूगर है	या

مَجْنُوْنٌ ﴿39﴾	فَاَخَذْنٰهُ	وَجُنُوْدَهٗ	فَنَبَذْنٰهُمْ	فِي الْيَمِّ	وَهُوَ
मजनून	तो पकड़ लिया हमने उसे	और उसके लश्करों को	तो फेंक दिया हमने उन्हें	समुन्दर में	और वो

مُلِيْمٌ ﴿40﴾ ط	وَفِيْ عَادٍ	اِذْ	اَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمُ	الرِّيْحَ	الْعَقِيْمَ ﴿41﴾ ج
मलामत ज़दा था	और आद में (निशानी है)	जब	भेजा हमने	उन पर	हवा	बांझ को

مَا	تَذَرُ	مِنْ شَيْءٍ	اَتَتْ	عَلَيْهِ	اِلَّا	جَعَلَتْهُ	كَالرَّمِيْمِ ﴿42﴾ ط
ना	उसने छोड़ा	किसी चीज़ को	वो आई	जिस पर	मगर	उसने कर दिया उसे	बोसीदा हड्डी की तरह

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَعَتَوْا	حَتّٰى حِيْنٍ ﴿43﴾	تَمَتَّعُوْا	لَهُمْ	قِيْلَ	اِذْ	وَفِيْ ثَمُوْدَ
तो उन्होंने सरकशी की	एक वक़्त तक	तुम फ़ायदा उठा लो	उनसे	कहा गया	जब	और समूद में (निशानी है)

فَمَا	يَنْظُرُوْنَ ﴿44﴾	وَهُمْ	الصّٰعِقَةُ	فَاَخَذَتْهُمُ	رَبِّهِمْ	عَنْ اَمْرِ
तो ना	वो देख रहे थे	इस हाल में कि वो	बिजली की कड़क ने	तो पकड़ लिया उन्हें	अपने रब के	हुक्म से

نُوْحٍ	وَقَوْمَ	مُنْتَصِرِيْنَ ﴿45﴾	كَانُوْا	وَّمَا	مِنْ قِيَامٍ	اسْتَطَاعُوْا
नूह	और क़ौमे	बदला लेने वाले	थे वो	और ना	खड़े होने की	वो इस्तिताअत रखते थे

ع 2 23 1

بَنَيْنٰهَا	وَالسَّمَآءَ	فٰسِقِيْنَ ﴿46﴾	قَوْمًا	كَانُوْا	اِنَّهُمْ	مِّنْ قَبْلُ
बनाया हमने उसे	और आसमान	फ़ासिक़	लोग	थे वो	बेशक वो	इससे क़ब्ल

فَنِعْمَ	فَرَشْنٰهَا	وَالْاَرْضَ	لَمُوْسِعُوْنَ ﴿47﴾	وَّاِنَّا	بِاَيْىدٍ
तो कितने अच्छे	बिछाया हमने उसे	और ज़मीन को	अलबत्ता वुसअत देने वाले हैं	और बेशक हम	साथ क़ुव्वत के

تَذَكَّرُوْنَ ﴿49﴾	لَعَلَّكُمْ	زَوْجَيْنِ	خَلَقْنَا	وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ	الْمٰهِدُوْنَ ﴿48﴾
तुम नसीहत पकड़ो	ताकि तुम	जोड़े	बनाए हमने	और हर चीज़ से	हमवार करने वाले हैं

مُّبِيْنٌ ﴿50﴾	نَذِيْرٌ	مِّنْهُ	لَكُمْ	اِنِّيْ	اِلَى اللّٰهِ	فَفِرُّوْٓا
खुल्लम-खुल्ला	डराने वाला हूं	उसकी तरफ़ से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	तरफ़ अल्लाह के	पस दौड़ो

مِّنْهُ	لَكُمْ	اِنِّيْ	اٰخَرَ	اِلٰهًا	اللّٰهِ	مَعَ	تَجْعَلُوْا	وَلَا
उसकी तरफ़ से	तुम्हारे लिए	बेशक मैं	कोई दूसरा	इलाह	अल्लाह के	साथ	तुम बनाओ	और ना

مِنْ قَبْلِهِمْ	الَّذِيْنَ	اَتَى	مَآ	كَذٰلِكَ	مُّبِيْنٌ ﴿51﴾	نَذِيْرٌ
उनसे पहले थे	उनके पास जो	आया	नहीं	इसी तरह	खुल्लम-खुल्ला	डराने वाला हूं

اَتَوَاصَوْا	مَجْنُوْنٌ ﴿52﴾	اَوْ	سَاحِرٌ	قَالُوْا	اِلَّا	مِّنْ رَّسُوْلٍ
क्या वो एक दूसरे को वसीयत कर गए	मजनून	या	जादूगर है	उन्होंने कहा	मगर	कोई रसूल

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْتَ	فَمَآ	عَنْهُمْ	فَتَوَلَّ	طَاغُوْنَ ﴿53﴾ ج	قَوْمٌ	هُمْ	بَلْ	بِهٖ ج
आप	पस नहीं	उनसे	पस मुंह मोड़ लीजिए	सरकश	लोग हैं	वो	बल्कि	उसकी

وَمَا	الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿55﴾	تَنْفَعُ	الذِّكْرٰى	فَاِنَّ	وَّذَكِّرْ	بِمَلُوْمٍ ﴿54﴾ قف
और नहीं	मोमिनों को	वो फ़ायदा देती है	नसीहत	पस बेशक	और नसीहत कीजिए	क़ाबिले मलामत

مِنْهُمْ	اُرِيْدُ	مَآ	لِيَعْبُدُوْنِ ﴿56﴾	اِلَّا	وَالْاِنْسَ	الْجِنَّ	خَلَقْتُ
उनसे	मैं चाहता	नहीं	इस लिए कि वो इबादत करें मेरी	मगर	और इंसानों को	जिन्नों	पैदा किया मैंने

هُوَ	اللّٰهَ	اِنَّ	يُّطْعِمُوْنِ ﴿57﴾	اَنْ	اُرِيْدُ	وَّمَآ	مِّنْ رِّزْقٍ
वो ही है	अल्लाह	बेशक	वो खिलाएं मुझे	कि	मैं चाहता	और नहीं	कोई रिज़्क़

ذَنُوْبًا	ظَلَمُوْا	لِلَّذِيْنَ	فَاِنَّ	الْمَتِيْنُ ﴿58﴾	ذُو الْقُوَّةِ	الرَّزَّاقُ
हिस्सा है	ज़ुल्म किया	उनके लिए जिन्होंने	तो बेशक	निहायत मज़बूत	क़ुव्वत वाला	ख़ूब रिज़्क़ देने वाला

فَوَيْلٌ	يَسْتَعْجِلُوْنِ ﴿59﴾	فَلَا	اَصْحٰبِهِمْ	ذَنُوْبِ	مِّثْلَ
पस हलाकत है	वो जल्दी तलब करें मुझसे	पस ना	उनके साथियों के	हिस्से के	मानिंद

يُوْعَدُوْنَ ﴿60﴾ ع	الَّذِيْ	مِنْ يَّوْمِهِمُ	كَفَرُوْا	لِّلَّذِيْنَ
वो वादा दिए जाते हैं	जिसका	उनके उस दिन से	कुफ़्र किया	उन लोगों के लिए जिन्होंने

ع 3 14 2

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُكُوْعَاتُهَا: 2 — 76 سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ 52 — اٰيَاتُهَا: 49

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَّالْبَيْتِ	مَّنْشُوْرٍ ﴿3﴾ لا	فِيْ رَقٍّ	مَّسْطُوْرٍ ﴿2﴾ لا	وَكِتٰبٍ	وَالطُّوْرِ ﴿1﴾ لا
और घर की	खुले हुए	वर्क़ में	लिखी हुई की	और किताब	क़सम है तूर की

اِنَّ	الْمَسْجُوْرِ ﴿6﴾ لا	وَالْبَحْرِ	الْمَرْفُوْعِ ﴿5﴾ لا	وَالسَّقْفِ	الْمَعْمُوْرِ ﴿4﴾ لا
बेशक	जो भड़काया हुआ है	और समुन्दर की	जो ऊंची उठाई गई है	और छत की	जो आबाद है

تَمُوْرُ	يَّوْمَ	مِنْ دَافِعٍ ⑧	لَهٗ	مَّا	لَوَاقِعٌ ⑦	رَبِّكَ	عَذَابَ
लरज़ेगा	जिस दिन	कोई दूर करने वाला	उसे	नहीं	यक़ीनन वाक़ेअ होने वाला है	आपके रब का	अज़ाब

يَّوْمَئِذٍ	فَوَيْلٌ	سَيْرًا ⑩	الْجِبَالُ	وَّتَسِيْرُ	مَوْرًا ⑨	السَّمَآءُ
उस दिन	पस हलाकत है	बहुत चलना	पहाड़	और चलेंगे	सख़्त लरज़ना	आसमान

يَوْمَ	يَّلْعَبُوْنَ ⑫	فِيْ خَوْضٍ	هُمْ	الَّذِيْنَ	لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ⑪
जिस दिन	वो खेल रहे हैं	बहस में	वो	वो लोग जो	झुठलाने वालों के लिए

كُنْتُمْ	الَّتِيْ	النَّارُ	هٰذِهِ	دَعًّا ⑬	جَهَنَّمَ	اِلٰى نَارِ	يُدَعُّوْنَ
थे तुम	वो जो	आग	ये है	सख़्त ढकेले जाना	जहन्नम की	तरफ़ आग के	वो ढकेले जाएंगे

لَا تُبْصِرُوْنَ ⑮	اَنْتُمْ	اَمْ	هٰذَآ	اَفَسِحْرٌ	تُكَذِّبُوْنَ ⑭	بِهَا
नहीं तुम देखते	तुम	या	ये	क्या भला जादू है	तुम झुठलाते	उसको

اِنَّمَا	عَلَيْكُمْ	سَوَآءٌ	لَا تَصْبِرُوْا	اَوْ	فَاصْبِرُوْٓا	اِصْلَوْهَا
बेशक	तुम पर	बराबर है	ना तुम सब्र करो	या	पस सब्र करो	जलो इसमें

فِيْ جَنّٰتٍ	الْمُتَّقِيْنَ	اِنَّ	تَعْمَلُوْنَ ⑯	كُنْتُمْ	مَا	تُجْزَوْنَ
बाग़ात में	मुत्तक़ी लोग	बेशक	तुम अमल करते	थे तुम	उसका जो	तुम बदला दिए जाते हो

وَوَقٰىهُمْ	رَبُّهُمْ	اٰتٰىهُمْ	بِمَآ	فٰكِهِيْنَ	وَّنَعِيْمٍ ⑰
और बचा लेगा उन्हें	उनके रब ने	अता किया उन्हें	साथ उसके जो	मज़े करने वाले होंगे	और नेअमतों में होंगे

كُنْتُمْ	بِمَا	هَنِيْٓــًٔا	وَاشْرَبُوْا	كُلُوْا	الْجَحِيْمِ ⑱	عَذَابَ	رَبُّهُمْ
थे तुम	बवजह उसके जो	मज़े से	और पियो	खाओ	जहन्नम के	अज़ाब से	रब उनका

وَزَوَّجْنٰهُمْ	مَّصْفُوْفَةٍ	عَلٰى سُرُرٍ	مُتَّكِـِٕيْنَ	تَعْمَلُوْنَ ⑲
और ब्याह देंगे हम उन्हें	क़तार में रखे हुए	तख़्तों पर	तकिया लगाए हुए होंगे	तुम अमल करते

وقف لازم

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِحُوْرٍ	عِيْنٍ ﴿20﴾	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَاتَّبَعَتْهُمْ	ذُرِّيَّتُهُمْ
साथ गोरी औरतों के	बड़ी आंखों वाली	और वो लोग जो	ईमान लाए	और पैरवी की उनकी	उनकी औलाद ने

بِاِيْمَانٍ	اَلْحَقْنَا	بِهِمْ	ذُرِّيَّتَهُمْ	وَمَآ	اَلَتْنٰهُمْ	مِّنْ عَمَلِهِمْ
साथ ईमान के	मिला देंगे हम	साथ उनके	उनकी औलाद को	और ना	कमी करेंगे हम उनसे	उनके अमल में से

مِّنْ شَيْءٍ ؕ	كُلُّ	امْرِئٍ	بِمَا	كَسَبَ	رَهِيْنٌ ﴿21﴾	وَاَمْدَدْنٰهُمْ
कुछ भी	हर	शख़्स	बवजह उसके जो	उसने कमाई की	रहन/गिरवी है	और हम दिए चले जाऐंगे उन्हें

بِفَاكِهَةٍ	وَّلَحْمٍ	مِّمَّا	يَشْتَهُوْنَ ﴿22﴾	يَتَنَازَعُوْنَ	فِيْهَا
फल	और गोश्त	उसमें से जो	वो ख़्वाहिश करेंगे	वो एक दूसरे से छीना-झपटी करेंगे	उसमें

كَاْسًا	لَّا لَغْوٌ	فِيْهَا	وَلَا	تَاْثِيْمٌ ﴿23﴾	وَيَطُوْفُ	عَلَيْهِمْ
जामे शराब पर	ना कोई बेहूदा गोई होगी	उसमें	और ना	कोई गुनाह (की बात)	और घूम रहे होंगे	उन पर

غِلْمَانٌ	لَّهُمْ	كَاَنَّهُمْ	لُؤْلُؤٌ	مَّكْنُوْنٌ ﴿24﴾	وَاَقْبَلَ	بَعْضُهُمْ
नौउम्र ख़ादिम	उनके लिए	गोया कि वो	मोती हैं	छुपाए हुए	और मुतावज्जह होंगे	बाज़ उनके

عَلٰى بَعْضٍ	يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿25﴾	قَالُوْٓا	اِنَّا	كُنَّا	قَبْلُ	فِيْٓ اَهْلِنَا
बाज़ पर	वो एक दूसरे से सवाल करेंगे	वो कहेंगे	बेशक हम	थे हम	इससे पहले	अपने घर वालों में

مُشْفِقِيْنَ ﴿26﴾	فَمَنَّ	اللّٰهُ	عَلَيْنَا	وَوَقٰنَا	عَذَابَ	السَّمُوْمِ ﴿27﴾
डरने वाले	पस एहसान किया	अल्लाह ने	हम पर	और उसने बचा लिया हमें	अज़ाब से	लू/निहायत गर्म हवा के

اِنَّا	كُنَّا	مِنْ قَبْلُ	نَدْعُوْهُ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْبَرُّ
बेशक हम	थे हम	इससे पहले	हम पुकारा करते उसी को	बेशक वो	वो ही है	बहुत एहसान करने वाला

الرَّحِيْمُ ﴿28﴾ ع	فَذَكِّرْ	فَمَآ	اَنْتَ	بِنِعْمَتِ	رَبِّكَ	بِكَاهِنٍ	وَّلَا
निहायत रहम करने वाला	पस नसीहत कीजिए	पस नहीं	आप	फ़ज़्ल से	अपने रब के	कोई काहिन	और ना

ع 1 28 3

مَجْنُوْنٍ ﴿29﴾ ط	اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	شَاعِرٌ	نَّتَرَبَّصُ	بِهٖ
मजनून	या	वो कहते हैं	एक शायर है	हम इंतिज़ार कर रहे हैं	उसके बारे में

رَيْبَ الْمَنُوْنِ ﴿30﴾	قُلْ	تَرَبَّصُوْا	فَاِنِّيْ	مَعَكُمْ	مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿31﴾ ط
गर्दिशे ज़माना (मौत) का	कह दीजिए	इंतिज़ार करो	पस बेशक मैं	साथ तुम्हारे	इंतिज़ार करने वालों में से हूं

اَمْ	تَاْمُرُهُمْ	اَحْلَامُهُمْ	بِهٰذَآ	اَمْ	هُمْ	قَوْمٌ	طَاغُوْنَ ﴿32﴾ ج
या	हुक्म देती हैं उन्हें	अक़्लें उनकी	उसका	या	वो	लोग हैं	सरकश

اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	تَقَوَّلَهٗ ج	بَلْ	لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿33﴾ ج	فَلْيَاْتُوْا	بِحَدِيْثٍ
या	वो कहते हैं	उसने गढ़ लिया है उसे	बल्कि	नहीं वो ईमान लाते	पस चाहिए कि वो लाऐं	कोई बात

مِّثْلِهٖٓ	اِنْ	كَانُوْا	صٰدِقِيْنَ ﴿34﴾ ط	اَمْ	خُلِقُوْا	مِنْ غَيْرِ	شَيْءٍ
इस जैसी	अगर	हैं वो	सच्चे	या	वो पैदा किए गए	बग़ैर	किसी चीज़ के

اَمْ	هُمُ	الْخٰلِقُوْنَ ﴿35﴾ ط	اَمْ	خَلَقُوا	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ ج	بَلْ
या	वो	पैदा करने वाले हैं	या	उन्होंने पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	बल्कि

لَّا يُوْقِنُوْنَ ﴿36﴾ ط	اَمْ	عِنْدَهُمْ	خَزَآئِنُ	رَبِّكَ	اَمْ	هُمُ
नहीं वो यक़ीन करते	या	उनके पास	ख़ज़ाने हैं	आपके रब के	या	वो

الْمُصَيْطِرُوْنَ ﴿37﴾ ط	اَمْ	لَهُمْ	سُلَّمٌ	يَّسْتَمِعُوْنَ	فِيْهِ ج	فَلْيَاْتِ
निगहबान हैं	या	उनके लिए	कोई सीढ़ी है	वो ग़ौर से सुनते हों	उसमें (चढ़ कर)	पस चाहिए कि लाए

مُسْتَمِعُهُمْ	بِسُلْطٰنٍ	مُّبِيْنٍ ﴿38﴾ ط	اَمْ	لَهُ	الْبَنٰتُ	وَلَكُمُ
उनका सुनने वाला	कोई दलील	खुली	या	उसके लिए हैं	बेटियां	और तुम्हारे लिए हैं

الْبَنُوْنَ ﴿39﴾ ط	اَمْ	تَسْئَلُهُمْ	اَجْرًا	فَهُمْ	مِّنْ مَّغْرَمٍ	مُّثْقَلُوْنَ ﴿40﴾ ط
बेटे	या	आप मांगते हैं उनसे	कोई अजर	तो वो	तावान से	बोझल हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَمْ	عِنْدَهُمُ	الْغَيْبُ	فَهُمْ	يَكْتُبُوْنَ ﴿41﴾ ط	اَمْ	يُرِيْدُوْنَ	كَيْدًا ط
या	उनके पास	ग़ैब है	तो वो	वो लिख रहे हैं	या	वो इरादा करते हैं	एक चाल का

فَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	هُمُ	الْمَكِيْدُوْنَ ﴿42﴾ ط	اَمْ	لَهُمْ	اِلٰهٌ	غَيْرُ
तो वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो ही	चाल में आने वाले हैं	या	उनके लिए	कोई इलाह है	सिवाए

اللّٰهِ ط	سُبْحٰنَ	اللّٰهِ	عَمَّا	يُشْرِكُوْنَ ﴿43﴾	وَاِنْ	يَّرَوْا	كِسْفًا
अल्लाह के	पाक है	अल्लाह	उससे जो	वो शरीक ठहराते हैं	और अगर	वो देखें	कोई टुकड़ा

مِّنَ السَّمَآءِ	سَاقِطًا	يَّقُوْلُوْا	سَحَابٌ	مَّرْكُوْمٌ ﴿44﴾	فَذَرْهُمْ	حَتّٰى
आसमान से	गिरने वाला	वो कहेंगे	बादल हैं	तह-ब-तह	पस छोड़ो उन्हें	यहां तक कि

يُلٰقُوْا	يَوْمَهُمُ	الَّذِيْ	فِيْهِ	يُصْعَقُوْنَ ﴿45﴾ لا	يَوْمَ	لَا يُغْنِيْ
वो जा मिलें	अपने (उस) दिन से	वो जो	उसमें	वो बेहोश किए जाऐंगे	जिस दिन	ना काम आएगी

عَنْهُمْ	كَيْدُهُمْ	شَيْـًٔا	وَّلَا	هُمْ	يُنْصَرُوْنَ ﴿46﴾ ط	وَاِنَّ	لِلَّذِيْنَ
उन्हें	चाल उनकी	कुछ भी	और ना	वो	वो मदद दिए जाऐंगे	और बेशक	उनके लिए जिन्होंने

ظَلَمُوْا	عَذَابًا	دُوْنَ	ذٰلِكَ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿47﴾
ज़ुल्म किया	एक अज़ाब है	इलावा	उसके	और लेकिन	अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते

وَاصْبِرْ	لِحُكْمِ	رَبِّكَ	فَاِنَّكَ	بِاَعْيُنِنَا	وَسَبِّحْ	بِحَمْدِ
और सब्र कीजिए	हुक्म के लिए	अपने रब के	पस बेशक आप	हमारी निगाहों के सामने हैं	और तस्बीह कीजिए	साथ तारीफ़ के

رَبِّكَ	حِيْنَ	تَقُوْمُ ﴿48﴾ لا	وَمِنَ الَّيْلِ	فَسَبِّحْهُ	وَاِدْبَارَ	النُّجُوْمِ ﴿49﴾ ع
अपने रब की	जिस वक़्त	आप खड़े होते हैं	और रात को	पस तस्बीह कीजिए उसकी	और पलटने के बाद	सितारों के

ع 2 21 4

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ 23 — 53

اٰيَاتُهَا: 62 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالنَّجْمِ	اِذَا	هَوٰى ①	مَا	ضَلَّ	صَاحِبُكُمْ	وَمَا	غَوٰى ② ج	وَمَا
क़सम है सितारे की	जब	वो गिरे	नहीं	राह भूला	साथी तुम्हारा	और ना ही	वो बहका	और नहीं

يَنْطِقُ	عَنِ الْهَوٰى ③ ط	اِنْ	هُوَ	اِلَّا	وَحْيٌ	يُّوْحٰى ④ لا	عَلَّمَهٗ
वो बोलता	ख़्वाहिशे नफ़्स से	नहीं	वो	मगर	एक वही	जो वही की जाती है	सिखाया उसे

شَدِيْدُ	الْقُوٰى ⑤ لا	ذُوْ مِرَّةٍ ط	فَاسْتَوٰى ⑥ لا	وَهُوَ	بِالْاُفُقِ	الْاَعْلٰى ⑦ ط
बहुत ज़बरदस्त	क़ुव्वत वाले ने	जो बड़ा ज़ोरआवर है	फिर वो सीधा खड़ा हो गया	और वो	किनारे पर था	बुलंद

ثُمَّ	دَنَا	فَتَدَلّٰى ⑧ لا	فَكَانَ	قَابَ	قَوْسَيْنِ	اَوْ	اَدْنٰى ⑨ ج
फिर	वो क़रीब हुआ	पस वो उतर आया	तो वो हो गया	बक़द्र	दो कमानों के	या	उससे ज़्यादा क़रीब

فَاَوْحٰٓى	اِلٰى عَبْدِهٖ	مَآ	اَوْحٰى ⑩ ط	مَا	كَذَبَ	الْفُؤَادُ	مَا
तो उसने वही पहुंचाई	उस (अल्लाह) के बंदे की तरफ़	जो	उसने वही पहुंचाई	नहीं	झूठ बोला	दिल ने	जो कुछ

رَاٰى ⑪	اَفَتُمٰرُوْنَهٗ	عَلٰى مَا	يَرٰى ⑫	وَلَقَدْ	رَاٰهُ	نَزْلَةً
उसने देखा	क्या फिर तुम झगड़ते हो उससे	ऊपर उसके जो	वो देखता है	और अलबत्ता तहक़ीक़	उसने देखा उसे	एक मर्तबा

اُخْرٰى ⑬ لا	عِنْدَ	سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ⑭	عِنْدَهَا	جَنَّةُ الْمَاْوٰى ⑮ ط	اِذْ
और भी	पास	सिदरतुल मुंतहा के	उसी के पास है	जन्नतुल मावा	जब

يَغْشَى	السِّدْرَةَ	مَا	يَغْشٰى ⑯ لا	مَا	زَاغَ	الْبَصَرُ	وَمَا	طَغٰى ⑰
छा रहा था	बेरी के दरख़्त पर	जो कुछ	छा रहा था	ना	कजी की	निगाह ने	और ना	वो हद से बढ़ी

لَقَدْ	رَاٰى	مِنْ اٰيٰتِ	رَبِّهِ	الْكُبْرٰى ⑱	اَفَرَءَيْتُمُ	اللّٰتَ
अलबत्ता तहक़ीक़	उसने देखीं	निशानियां	अपने रब की	बड़ी-बड़ी	क्या फिर देखा तुमने	लात

وَالْعُزّٰى ⑲ لا	وَمَنٰوةَ	الثَّالِثَةَ	الْاُخْرٰى ⑳	اَلَكُمُ	الذَّكَرُ	وَلَهُ
और उज़्ज़ा को	और मनात	तीसरी	एक और को	क्या तुम्हारे लिए हैं	लड़के	और उसके लिए हैं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاُنْثٰى ﴿21﴾	تِلْكَ	اِذًا	قِسْمَةٌ	ضِيْزٰى ﴿22﴾	اِنْ	هِيَ	اِلَّآ	اَسْمَآءٌ
लड़कियां	ये	तब	एक तक़्सीम है	नाइंसाफ़ी की	नहीं	वो	मगर	कुछ नाम हैं

سَمَّيْتُمُوْهَآ	اَنْتُمْ	وَاٰبَآؤُكُمْ	مَّآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	بِهَا
नाम रखे तुमने उनके	तुमने	और तुम्हारे आबा ओ अजदाद ने	नहीं	नाज़िल की	अल्लाह ने	उनकी

مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ	اِنْ	يَّتَّبِعُوْنَ	اِلَّا	الظَّنَّ	وَمَا	تَهْوَى	الْاَنْفُسُ ۚ
कोई दलील	नहीं	वो पैरवी करते	मगर	गुमान की	और उसकी जो	ख़्वाहिश करते हैं	नफ़्स

وَلَقَدْ	جَآءَهُمْ	مِّنْ رَّبِّهِمُ	الْهُدٰى ﴿23﴾ ؕ	اَمْ	لِلْاِنْسَانِ	مَا
और अलबत्ता तहक़ीक़	आई उनके पास	उनके रब की तरफ़ से	हिदायत	क्या है	इंसान के लिए	जो

تَمَنّٰى ﴿24﴾ ۖ	فَلِلّٰهِ	الْاٰخِرَةُ	وَالْاُوْلٰى ﴿25﴾ ع	وَكَمْ	مِّنْ مَّلَكٍ	فِي السَّمٰوٰتِ
वो तमन्ना करे	तो अल्लाह ही के लिए है	आख़िरत	और पहली (दुनिया)	और कितने ही	फ़रिश्ते हैं	आसमानों में

ع 1 25 5

لَا تُغْنِيْ	شَفَاعَتُهُمْ	شَيْـًٔا	اِلَّا	مِنْۢ بَعْدِ	اَنْ	يَّاْذَنَ	اللّٰهُ
ना काम आएगी	सिफ़ारिश उनकी	कुछ भी	मगर	इसके बाद	कि	इजाज़त दे	अल्लाह

لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيَرْضٰى ﴿26﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ
जिसके लिए	वो चाहे	और वो राज़ी हो जाए	बेशक	वो लोग जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर

لَيُسَمُّوْنَ	الْمَلٰٓئِكَةَ	تَسْمِيَةَ	الْاُنْثٰى ﴿27﴾	وَمَا	لَهُمْ	بِهٖ
अलबत्ता वो नाम रखते हैं	फ़रिश्तों के	नाम	औरतों जैसे	और नहीं	उन्हें	इसका

مِنْ عِلْمٍ ؕ	اِنْ	يَّتَّبِعُوْنَ	اِلَّا	الظَّنَّ ۚ	وَاِنَّ	الظَّنَّ	لَا يُغْنِيْ
कोई इल्म	नहीं	वो पैरवी करते	मगर	गुमान की	और बेशक	गुमान	नहीं वो काम आता

مِنَ الْحَقِّ	شَيْـًٔا ﴿28﴾ ۚ	فَاَعْرِضْ	عَنْ	مَّنْ	تَوَلّٰى ۙ	عَنْ ذِكْرِنَا
हक़ के (मुक़ाबले पर)	कुछ भी	तो ऐराज़ कीजिए	उससे	जो	मुंह मोड़े	हमारे ज़िक्र से

وَلَمْ	يُرِدْ	اِلَّا	الْحَيٰوةَ	الدُّنْيَا ﴿29﴾	ذٰلِكَ	مَبْلَغُهُمْ	مِّنَ الْعِلْمِ ؕ
और ना	वो चाहे	मगर	ज़िंदगी	दुनिया की	ये ही	इंतिहा है उनकी	इल्म में

اِنَّ	رَبَّكَ	هُوَ	اَعْلَمُ	بِمَنْ	ضَلَّ	عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ	وَهُوَ
बेशक	रब आपका	वो	ज़्यादा जानता है	उसे जो	भटक गया	उसके रास्ते से	और वो

ع

اَعْلَمُ	بِمَنِ	اهْتَدٰى ﴿30﴾	وَلِلّٰهِ	مَا	فِى السَّمٰوٰتِ	وَمَا
ज़्यादा जानता है	उसे जो	हिदायत पा गया	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ

فِى الْاَرْضِ ۙ	لِيَجْزِىَ	الَّذِيْنَ	اَسَآءُوْا	بِمَا	عَمِلُوْا	وَيَجْزِىَ
ज़मीन में है	ताकि वो बदला दे	उनको जिन्होंने	बुरा किया	बवजह इसके जो	उन्होंने अमल किए	और वो बदला दे

الَّذِيْنَ	اَحْسَنُوْا	بِالْحُسْنٰى ۚ ﴿31﴾	اَلَّذِيْنَ	يَجْتَنِبُوْنَ	كَبٰٓئِرَ	الْاِثْمِ
उनको जिन्होंने	अच्छा किया	साथ भलाई के	वो लोग जो	इज्तिनाब करते हैं	कबीरा	गुनाहों से

وَالْفَوَاحِشَ	اِلَّا	اللَّمَمَ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	وَاسِعُ	الْمَغْفِرَةِ ؕ
और बेहयाई से	सिवाए	छोटे गुनाहों के	बेशक	रब आपका	वसीअ	मग़फ़िरत वाला है

هُوَ	اَعْلَمُ	بِكُمْ	اِذْ	اَنْشَاَكُمْ	مِّنَ الْاَرْضِ	وَاِذْ	اَنْتُمْ
वो	ज़्यादा जानता है	तुम्हें	जब	उसने पैदा किया तुम्हें	ज़मीन में	और जब	तुम

اَجِنَّةٌ	فِىْ بُطُوْنِ	اُمَّهٰتِكُمْ ۚ	فَلَا	تُزَكُّوْٓا	اَنْفُسَكُمْ ؕ	هُوَ
जनीन थे	पेटों में	अपनी मांओं के	पस ना	तुम पाक ठहराओ	अपने नफ़्सों को	वो

ع 2/7/6

اَعْلَمُ	بِمَنِ	اتَّقٰى ﴿32﴾ ع	اَفَرَءَيْتَ	الَّذِىْ	تَوَلّٰى ﴿33﴾ ۙ	وَاَعْطٰى	قَلِيْلًا
ज़्यादा जानता है	उसे जिसने	तक़्वा इख़्तियार किया	क्या भला देखा आप ने	उसे जो	मुंह मोड़ गया	और उसने दिया	थोड़ा सा

وَّاَكْدٰى ﴿34﴾	اَعِنْدَهٗ	عِلْمُ	الْغَيْبِ	فَهُوَ	يَرٰى ﴿35﴾	اَمْ	لَمْ
और उसने रोक लिया	क्या उसके पास	इल्म है	ग़ैब का	तो वो	वो देख रहा है	या	नहीं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُنَبَّاْ	بِمَا	فِيْ صُحُفِ	مُوْسٰى ﴿36﴾	وَاِبْرٰهِيْمَ	الَّذِيْ	وَفّٰٓى ﴿37﴾	اَلَّا
वो ख़बर दिया गया	उसकी जो	सहीफ़ों में है	मूसा के	और इब्राहीम के	जिसने	वफ़ा की	कि ना

تَزِرُ	وَازِرَةٌ	وِّزْرَ	اُخْرٰى ﴿38﴾	وَاَنْ	لَّيْسَ	لِلْاِنْسَانِ	اِلَّا
बोझ उठाएगी	कोई बोझ उठाने वाली	बोझ	किसी दूसरी का	और ये कि	नहीं है	इंसान के लिए	मगर

مَا	سَعٰى ﴿39﴾	وَاَنَّ	سَعْيَهٗ	سَوْفَ	يُرٰى ﴿40﴾	ثُمَّ	يُجْزٰىهُ
जो	उसने कोशिश की	और ये कि	कोशिश उसकी	अनक़रीब	वो देखी जाएगी	फिर	बदला दिया जाएगा उसे

اَلْجَزَآءَ	الْاَوْفٰى ﴿41﴾	وَاَنَّ	اِلٰى رَبِّكَ	الْمُنْتَهٰى ﴿42﴾	وَاَنَّهٗ	هُوَ
बदला	पूरा-पूरा	और बेशक	आपके रब की तरफ़ ही	इंतिहा है	और बेशक वो	वो ही है

اَضْحَكَ	وَاَبْكٰى ﴿43﴾	وَاَنَّهٗ	هُوَ	اَمَاتَ	وَاَحْيَا ﴿44﴾	وَاَنَّهٗ
जिसने हंसाया	और उसने रुलाया	और बेशक वो	वो ही है	जिसने मौत दी	और उसने ज़िंदा किया	और बेशक वो ही है

خَلَقَ	الزَّوْجَيْنِ	الذَّكَرَ	وَالْاُنْثٰى ﴿45﴾	مِنْ نُّطْفَةٍ	اِذَا	تُمْنٰى ﴿46﴾
जिसने पैदा किया	जोड़ों को	नर	और मादा को	नुत्फ़े से	जब	वो टपकाया जाता है

وَاَنَّ	عَلَيْهِ	النَّشْاَةَ	الْاُخْرٰى ﴿47﴾	وَاَنَّهٗ	هُوَ	اَغْنٰى	وَاَقْنٰى ﴿48﴾
और बेशक	उसी के ज़िम्मा है	पैदाइश	दूसरी मर्तबा	और बेशक वो	वो ही है	जिसने ग़नी किया	और उसने मालदार बनाया

وَاَنَّهٗ	هُوَ	رَبُّ	الشِّعْرٰى ﴿49﴾	وَاَنَّهٗٓ	اَهْلَكَ	عَادًا	الْاُوْلٰى ﴿50﴾
और बेशक वो	वो ही है	रब	शिअरा (सितारे) का	और बेशक वो ही है	जिसने हलाक किया	आदे	ऊला को

وَثَمُوْدَا	فَمَآ	اَبْقٰى ﴿51﴾	وَقَوْمَ	نُوْحٍ	مِّنْ قَبْلُ	اِنَّهُمْ	كَانُوْا
और समूद को	पस ना	उसने बाक़ी छोड़ा	और क़ौमे	नूह को	उससे क़ब्ल	बेशक वो	थे वो

هُمْ	اَظْلَمَ	وَاَطْغٰى ﴿52﴾	وَالْمُؤْتَفِكَةَ	اَهْوٰى ﴿53﴾	فَغَشّٰىهَا	مَا
वो	बहुत ज़ालिम	और ज़्यादा सरकश	और उलट जाने वाली बस्ती को	उसने नीचे दे मारा	तो ढांप लिया उन्हें	जिसने

غَشّٰى ⑤④ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكَ	تَتَمَارٰى ⑤⑤	هٰذَا	نَذِيْرٌ	مِّنَ النُّذُرِ
ढांपा	पस कौन सी	नेअमतों पर	अपने रब की	तुम शक करते हो	ये	एक डराने वाला है	डराने वालों में से

الْاُوْلٰى ⑤⑥	اَزِفَتِ	الْاٰزِفَةُ ⑤⑦ ج	لَيْسَ	لَهَا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ
पहले	नज़दीक आ गई	नज़दीक आने वाली	नहीं	उसके लिए	सिवाए	अल्लाह के

كَاشِفَةٌ ⑤⑧ ط	اَفَمِنْ	هٰذَا	الْحَدِيْثِ	تَعْجَبُوْنَ ⑤⑨ لا	وَتَضْحَكُوْنَ
कोई हटाने वाला	क्या भला	इस	बात से	तुम ताअज्जुब करते हो	और तुम हंसते हो

ع 3 30 7 السجدة 12

وَلَا تَبْكُوْنَ ⑥⓪ لا	وَاَنْتُمْ	سٰمِدُوْنَ ⑥①	فَاسْجُدُوْا	لِلّٰهِ	وَاعْبُدُوْا ⑥② السجدة
और नहीं तुम रोते	और तुम	ग़ाफ़िल हो	पस सज्दा करो	अल्लाह के लिए	और इबादत करो

اٰيَاتُهَا : 55 — 54 سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ 37 — رُكُوْعَاتُهَا : 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَتِ	السَّاعَةُ	وَانْشَقَّ	الْقَمَرُ ①	وَاِنْ	يَّرَوْا	اٰيَةً	يُّعْرِضُوْا
क़रीब आ गई	क़यामत	और शक़ हो गया	चांद	और अगर	वो देख लें	कोई भी निशानी	वो मुंह मोड़ जाते हैं

وَيَقُوْلُوْا	سِحْرٌ	مُّسْتَمِرٌّ ②	وَكَذَّبُوْا	وَاتَّبَعُوْٓا	اَهْوَآءَهُمْ	وَكُلُّ
और वो कहते हैं	एक जादू है	जारी	और उन्होंने झुठलाया	और उन्होंने पैरवी की	अपनी ख़्वाहिशात की	और हर

اَمْرٍ	مُّسْتَقِرٌّ ③	وَلَقَدْ	جَآءَهُمْ	مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ	مَا فِيْهِ	مُزْدَجَرٌ ④ لا
काम का	वक़्त मुक़र्रर है	और अलबत्ता तहक़ीक़	आई उनके पास	कई ख़बरें	जिनमें	काफ़ी तम्बीह है

وقف النبي ﷺ

حِكْمَةٌ ۢ	بَالِغَةٌ	فَمَا	تُغْنِ	النُّذُرُ ⑤ لا	فَتَوَلَّ	عَنْهُمْ م	يَوْمَ
हिक्मत है	कामिल	तो ना	काम आए	डरावे	तो मुंह फेर लीजिए	उनसे	जिस दिन

يَدْعُ	الدَّاعِ	اِلٰى شَيْءٍ	نُّكُرٍ ⑥ لا	خُشَّعًا	اَبْصَارُهُمْ	يَخْرُجُوْنَ
पुकारेगा	पुकारने वाला	तरफ़ एक चीज़	नागवार के	झुकी हुई होंगी	निगाहें उनकी	वो निकलेंगे

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ الْاَجْدَاثِ	كَاَنَّهُمْ	جَرَادٌ	مُّنْتَشِرٌ ۙ﴿7﴾	مُّهْطِعِيْنَ	اِلَى الدَّاعِ ؕ
क़ब्रों से	गोया कि वो	टिड्डियां हैं	फैली हुईं	दौड़ते होंगे	तरफ़ पुकारने वाले के

يَقُوْلُ	الْكٰفِرُوْنَ	هٰذَا	يَوْمٌ	عَسِرٌ ﴿8﴾	كَذَّبَتْ	قَبْلَهُمْ	قَوْمُ	نُوْحٍ
कहेंगे	काफ़िर	ये	दिन है	बड़ा सख़्त	झुठलाया	इनसे पहले	क़ौमे	नूह ने

فَكَذَّبُوْا	عَبْدَنَا	وَقَالُوْا	مَجْنُوْنٌ	وَّازْدُجِرَ ﴿9﴾	فَدَعَا	رَبَّهٗۤ
तो उन्होंने झुठलाया	हमारे बंदे को	और उन्होंने कहा	मजनून है	और वो झिड़क दिया गया	तो उसने पुकारा	अपने रब को

اَنِّيْ	مَغْلُوْبٌ	فَانْتَصِرْ ﴿10﴾	فَفَتَحْنَاۤ	اَبْوَابَ	السَّمَآءِ	بِمَآءٍ
बेशक मैं	मग़लूब हूं	पस तू इन्तिक़ाम ले	तो खोल दिए हमने	दरवाज़े	आसमान के	साथ एक पानी

مُّنْهَمِرٍ ﴿11﴾ ۖ	وَّفَجَّرْنَا	الْاَرْضَ	عُيُوْنًا	فَالْتَقَى	الْمَآءُ	عَلٰۤى اَمْرٍ	قَدْ
ख़ूब बरसने वाले के	और फाड़ दिया हमने	ज़मीन से	चश्मों को	पस मिल गया	पानी	एक काम पर	तहक़ीक़

قُدِرَ ﴿12﴾ ۚ	وَحَمَلْنٰهُ	عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ	وَّدُسُرٍ ﴿13﴾ ۙ	تَجْرِيْ	بِاَعْيُنِنَا ۚ
जो मुक़द्दर हो चुका था	और सवार किया हमने उसे	ऊपर तख़्तों वाली	और मेख़ों वाली के	जो चल रही थी	हमारी निगाहों के सामने

جَزَآءً	لِّمَنْ	كَانَ	كُفِرَ ﴿14﴾	وَلَقَدْ	تَّرَكْنٰهَاۤ	اٰيَةً	فَهَلْ
बदला था	उसका जो	था	इंकार किया गया	और अलबत्ता तहक़ीक़	छोड़ दिया हमने उसे	एक निशानी (बनाकर)	तो क्या है

مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿15﴾	فَكَيْفَ	كَانَ	عَذَابِيْ	وَنُذُرِ ﴿16﴾	وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا
कोई नसीहत पकड़ने वाला	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	और अलबत्ता तहक़ीक़	आसान कर दिया हमने

الْقُرْاٰنَ	لِلذِّكْرِ	فَهَلْ	مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿17﴾	كَذَّبَتْ	عَادٌ	فَكَيْفَ	كَانَ
क़ुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	आद ने	तो कैसा	था

عَذَابِيْ	وَنُذُرِ ﴿18﴾	اِنَّاۤ	اَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	رِيْحًا	صَرْصَرًا	فِيْ يَوْمِ
अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	बेशक हम	भेजा हमने	उन पर	एक हवा	तुंद व तेज़ को	एक दिन में

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ﴿19﴾ لا	تَنْزِعُ	النَّاسَ لا	كَاَنَّهُمْ	اَعْجَازُ	نَخْلٍ
मुसलसल नहूसत वाले	उखाड़ कर फेंक रही थी	लोगों को	गोया कि वो	तने थे	खजूर के

مُّنْقَعِرٍ ﴿20﴾	فَكَيْفَ	كَانَ	عَذَابِيْ	وَنُذُرِ ﴿21﴾	وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا	الْقُرْاٰنَ
जड़ से उखड़े हुए	तो कैसा	था	अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	और अलबत्ता तहक़ीक़	आसान कर दिया हमने	क़ुरआन को

ع 1 22 8

لِلذِّكْرِ	فَهَلْ	مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿22﴾ ع	كَذَّبَتْ	ثَمُوْدُ	بِالنُّذُرِ ﴿23﴾	فَقَالُوْٓا
नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	समूद ने	डराने वालों को	तो उन्होंने कहा

اَبَشَرًا	مِّنَّا	وَاحِدًا	نَّتَّبِعُهٗٓ لا	اِنَّآ	اِذًا	لَّفِيْ ضَلٰلٍ	وَّسُعُرٍ ﴿24﴾
क्या एक आदमी	हम में से	अकेला	हम पैरवी करें उसकी	बेशक हम	तब	अलबत्ता गुमराही में होंगे	और जुनून में

ءَاُلْقِيَ	الذِّكْرُ	عَلَيْهِ	مِنْۢ بَيْنِنَا	بَلْ	هُوَ	كَذَّابٌ	اَشِرٌ ﴿25﴾
क्या डाला गया	ज़िक्र/नसीहत	इस पर	हमारे दर्मियान से	बल्कि	वो है	सख़्त झूठा	बहुत इतराने वाला

سَيَعْلَمُوْنَ	غَدًا	مَّنِ	الْكَذَّابُ	الْاَشِرُ ﴿26﴾	اِنَّا	مُرْسِلُوا	النَّاقَةِ
अनक़रीब वो जान लेंगे	कल	कौन है	सख़्त झूठा	बहुत इतराने वाला	बेशक हम	भेजने वाले हैं	ऊंटनी को

فِتْنَةً	لَّهُمْ	فَارْتَقِبْهُمْ	وَاصْطَبِرْ ﴿27﴾	وَنَبِّئْهُمْ	اَنَّ	الْمَآءَ	قِسْمَةٌۢ
बतौर आज़माइश	उनके लिए	पस इंतिज़ार करो उनका	और सब्र करो	और आगाह कर दो उन्हें	बेशक	पानी	तक़्सीम करदा है

بَيْنَهُمْ ج	كُلُّ	شِرْبٍ	مُّحْتَضَرٌ ﴿28﴾	فَنَادَوْا	صَاحِبَهُمْ	فَتَعَاطٰى
दर्मियान उनके	हर एक के	पानी की बारी	हाज़िर की गई है	तो उन्होंने पुकारा	अपने साथी को	तो उसने पकड़ा

فَعَقَرَ ﴿29﴾	فَكَيْفَ	كَانَ	عَذَابِيْ	وَنُذُرِ ﴿30﴾	اِنَّآ	اَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ
फिर उसने कूंचें काट डालीं	फिर कैसा	था	अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	बेशक हम	भेजी हमने	उन पर

صَيْحَةً	وَّاحِدَةً	فَكَانُوْا	كَهَشِيْمِ	الْمُحْتَظِرِ ﴿31﴾	وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا
चिंघाड़	एक ही	तो हो गए वो	मानिंद रौंदी हुई बाड़ के	बाड़ लगाने वाले की	और अलबत्ता तहक़ीक़	आसान कर दिया हमने

© ISLAMIC HUDA FOUNDATION WELFARE FOUNDATION

الْقُرْاٰنَ	لِلذِّكْرِ	فَهَلْ	مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿32﴾	كَذَّبَتْ	قَوْمُ	لُوْطٍ
क़ुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	झुठलाया	क़ौमे	लूत ने

بِالنُّذُرِ ﴿33﴾	اِنَّآ	اَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	حَاصِبًا	اِلَّآ	اٰلَ لُوْطٍ ؕ	نَجَّيْنٰهُمْ
डराने वालों को	बेशक हम	भेजी हमने	उन पर	पत्थरों की आंधी	सिवाए	आले लूत के	निजात दी हमने उन्हें

بِسَحَرٍ ﴿34﴾	نِّعْمَةً	مِّنْ عِنْدِنَا ؕ	كَذٰلِكَ	نَجْزِيْ	مَنْ	شَكَرَ ﴿35﴾
सहर के वक़्त	बतौर इनआम	हमारे पास से	इसी तरह	हम बदला देते हैं	उसे जो	शुक्र अदा करे

وَلَقَدْ	اَنْذَرَهُمْ	بَطْشَتَنَا	فَتَمَارَوْا	بِالنُّذُرِ ﴿36﴾	وَلَقَدْ
और अलबत्ता तहक़ीक़	उसने डराया उन्हें	हमारी पकड़ से	तो उन्होंने शक किया	डरावों पर	और अलबत्ता तहक़ीक़

رَاوَدُوْهُ	عَنْ ضَيْفِهٖ	فَطَمَسْنَآ	اَعْيُنَهُمْ	فَذُوْقُوْا	عَذَابِيْ
उन्होंने फुसलाना चाहा उसे	उसके मेहमानों के बारे में	तो मिटा दीं हमने	आंखें उनकी	तो चखो	अज़ाब मेरा

وَنُذُرِ ﴿37﴾	وَلَقَدْ	صَبَّحَهُمْ	بُكْرَةً	عَذَابٌ	مُّسْتَقِرٌّ ﴿38﴾ ج	فَذُوْقُوْا
और डराना मेरा	और अलबत्ता तहक़ीक़	सुबह की उन पर	सुबह सवेरे	एक अज़ाब	मुसलसल ने	तो चखो

عَذَابِيْ	وَنُذُرِ ﴿39﴾	وَلَقَدْ	يَسَّرْنَا	الْقُرْاٰنَ	لِلذِّكْرِ	فَهَلْ
अज़ाब मेरा	और डराना मेरा	और अलबत्ता तहक़ीक़	आसान कर दिया हमने	क़ुरआन को	नसीहत के लिए	तो क्या है

ع 2 18 9

مِنْ مُّدَّكِرٍ ﴿40﴾ ع	وَلَقَدْ	جَآءَ	اٰلَ فِرْعَوْنَ	النُّذُرُ ﴿41﴾ ج	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا
कोई नसीहत पकड़ने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	आए	आले फ़िरऔन के पास	डराने वाले	उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को

كُلِّهَا	فَاَخَذْنٰهُمْ	اَخْذَ	عَزِيْزٍ	مُّقْتَدِرٍ ﴿42﴾	اَكُفَّارُكُمْ	خَيْرٌ
सब की	तो पकड़ लिया हमने उन्हें	पकड़ना	बहुत ज़बरदस्त	इक़्तिदार वाले का	क्या कुफ़्फ़ार तुम्हारे	बेहतर हैं

مِّنْ اُولٰٓئِكُمْ	اَمْ	لَكُمْ	بَرَآءَةٌ	فِي الزُّبُرِ ﴿43﴾ ج	اَمْ	يَقُوْلُوْنَ	نَحْنُ
उन लोगों से	या	तुम्हारे लिए	कोई छुटकारा पाना है	(पहली) किताबों में	या	वो कहते हैं	हम हैं

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

جَمِيْعٌ	مُّنْتَصِرٌ (44)	سَيُهْزَمُ	الْجَمْعُ	وَيُوَلُّوْنَ	الدُّبُرَ (45)	بَلِ
एक जमाअत	बदला लेने वाले	अनक़रीब शिकस्त खा जाएगा	जत्था	और वो फेर लेंगे	पुश्तें	बल्कि

السَّاعَةُ	مَوْعِدُهُمْ	وَالسَّاعَةُ	اَدْهٰى	وَاَمَرُّ (46)	اِنَّ	الْمُجْرِمِيْنَ
क़यामत	उनके वादे का वक़्त है	और क़यामत	बहुत सख़्त है	और बहुत कड़वी	बेशक	मुजरिम लोग

وقف لازم

فِيْ ضَلٰلٍ	وَّسُعُرٍ (47)	يَوْمَ	يُسْحَبُوْنَ	فِي النَّارِ	عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ط
गुमराही में हैं	और जुनून में	जिस दिन	वो घसीटे जाऐंगे	आग में	अपने चेहरों के बल

ذُوْقُوْا	مَسَّ	سَقَرَ (48)	اِنَّا	كُلَّ	شَيْءٍ	خَلَقْنٰهُ	بِقَدَرٍ (49)
चखो	छूना	दोज़ख़ का	बेशक हमने	हर	चीज़ को	पैदा किया हमने उसे	साथ एक अंदाज़े के

وَمَآ	اَمْرُنَآ	اِلَّا	وَاحِدَةٌ	كَلَمْحٍ	بِالْبَصَرِ (50)	وَلَقَدْ	اَهْلَكْنَآ
और नहीं	हुक्म हमारा	मगर	एक ही बार	मानिंद झपकने के	निगाह को	और अलबत्ता तहक़ीक़	हलाक किया हमने

اَشْيَاعَكُمْ	فَهَلْ	مِنْ مُّدَّكِرٍ (51)	وَكُلُّ	شَيْءٍ	فَعَلُوْهُ	فِي الزُّبُرِ (52)
तुम्हारे गिरोहों को	तो क्या है	कोई नसीहत पकड़ने वाला	और हर	चीज़	उन्होंने किया जिसे	सहीफ़ों में है

وَكُلُّ	صَغِيْرٍ	وَّكَبِيْرٍ	مُّسْتَطَرٌ (53)	اِنَّ	الْمُتَّقِيْنَ	فِيْ جَنّٰتٍ
और हर	छोटा	और बड़ा	लिखा हुआ है	बेशक	मुत्तक़ी लोग	बाग़ात में होंगे

ع 3 15 10

وَّنَهَرٍ (54) لا	فِيْ مَقْعَدِ	صِدْقٍ	عِنْدَ مَلِيْكٍ	مُّقْتَدِرٍ (55) ع
और नहरों में	जगह में	सच्चाई की	बादशाह के पास	जो इक़्तिदार वाला है

اٰيَاتُهَا: 78 — سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ 55 97 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلرَّحْمٰنُ (1) لا	عَلَّمَ	الْقُرْاٰنَ (2) ط	خَلَقَ	الْاِنْسَانَ (3) لا	عَلَّمَهُ	الْبَيَانَ (4)
रहमान	उसने तालीम दी	क़ुरआन की	उसने पैदा किया	इंसान को	सिखाया उसे	बोलना

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلشَّمْسُ	وَالْقَمَرُ	بِحُسْبَانٍ ۝5 ص	وَّالنَّجْمُ	وَالشَّجَرُ	يَسْجُدٰنِ ۝6
सूरज	और चांद	एक हिसाब के साथ हैं	और सितारे/बेलें	और दरख़्त	वो दोनों सज्दा कर रहे हैं

وَالسَّمَآءَ	رَفَعَهَا	وَوَضَعَ	الْمِيْزَانَ ۝7 لا	اَلَّا	تَطْغَوْا	فِي الْمِيْزَانِ ۝8
और आसमान	उसने बुलंद किया उसे	और उसने रख दिया	मीज़ान	कि ना	तुम ज़्यादती करो	मीज़ान में

وَاَقِيْمُوا	الْوَزْنَ	بِالْقِسْطِ	وَلَا	تُخْسِرُوا	الْمِيْزَانَ ۝9	وَالْاَرْضَ
और क़ायम करो	वज़न को	साथ इंसाफ़ के	और ना	तुम कमी करो	तोल में	और ज़मीन

وَضَعَهَا	لِلْاَنَامِ ۝10 لا	فِيْهَا	فَاكِهَةٌ ۝ص	وَّالنَّخْلُ	ذَاتُ الْاَكْمَامِ ۝11 صلے
उसने रख दिया उसे	मख़लूक़ात के लिए	उसमें	फल हैं	और खजूर के दरख़्त हैं	ख़ोशों वाले

وَالْحَبُّ	ذُو الْعَصْفِ	وَالرَّيْحَانُ ۝12 ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
और ग़ल्ले हैं	भुस वाले	और ख़ुशबूदार फूल हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ۝13	خَلَقَ	الْاِنْسَانَ	مِنْ صَلْصَالٍ	كَالْفَخَّارِ ۝14 لا	وَخَلَقَ
तुम दोनों झुठलाओगे	उसने पैदा किया	इंसान को	बजने वाली मिट्टी से	ठीकरी की तरह की	और उसने पैदा किया

الْجَآنَّ	مِنْ مَّارِجٍ	مِّنْ نَّارٍ ۝15 ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ۝16
जिन्न को	शोले से	आग के	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

رَبُّ	الْمَشْرِقَيْنِ	وَرَبُّ	الْمَغْرِبَيْنِ ۝17 ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
रब है	दो मशरिक़ों का	और रब है	दो मग़रिबों का	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ۝18	مَرَجَ	الْبَحْرَيْنِ	يَلْتَقِيٰنِ ۝19 لا	بَيْنَهُمَا	بَرْزَخٌ
तुम दोनों झुठलाओगे	उसने छोड़ दिया	दो समुन्दरों को	वो दोनों बाहम मिलते हैं	उन दोनों के दर्मियान	एक पर्दा है

لَا يَبْغِيٰنِ ۝20 ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ۝21	يَخْرُجُ	مِنْهُمَا
नहीं वो दोनों तजावुज़ करते	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	निकलते हैं	इन दोनों से

اللُّؤْلُؤُ	وَالْمَرْجَانُ ﴿22﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿23﴾	وَلَهُ
मोती	और मूंगे	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	और उसी के लिए हैं

النصف

الْجَوَارِ	الْمُنْشَئٰتُ	فِي الْبَحْرِ	كَالْاَعْلَامِ ﴿24﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
जहाज़	ऊंचे उठे हुए	समुन्दर में	ऊंचे पहाड़ों की तरह	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

ع 1 25 11

تُكَذِّبٰنِ ﴿25﴾ ع	كُلُّ	مَنْ	عَلَيْهَا	فَانٍ ﴿26﴾ ج	وَّيَبْقٰى	وَجْهُ	رَبِّكَ
तुम दोनों झुठलाओगे	सब	जो	उस पर हैं	फ़ना होने वाले हैं	और बाक़ी रहेगा	चेहरा	आपके रब का

ذُو الْجَلٰلِ	وَالْاِكْرَامِ ﴿27﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿28﴾	يَسْئَلُهُ
बुज़ुर्गी वाला	और इज़्ज़त वाला	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	मांगता है उसी से

مَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ط	كُلَّ	يَوْمٍ	هُوَ	فِيْ شَاْنٍ ﴿29﴾ ج	فَبِاَيِّ
जो भी	आसमानों में	और ज़मीन में है	हर	दिन	वो	एक नई शान में है	तो कौन सी

اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿30﴾	سَنَفْرُغُ	لَكُمْ	اَيُّهَ	الثَّقَلٰنِ ﴿31﴾ ج
नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	अनक़रीब हम फ़ारिग़ हो जाएंगे	तुम्हारे लिए	ऐ	दो बोझो (जिन्न व इन्स)

فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿32﴾	يٰمَعْشَرَ	الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ	اِنِ
तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	ऐ गिरोह	जिन्नों	और इंसानों के	अगर

اسْتَطَعْتُمْ	اَنْ	تَنْفُذُوْا	مِنْ اَقْطَارِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	فَانْفُذُوْا ط
तुम इस्तिताअत रखते हो	कि	तुम निकल जाओ	किनारों से	आसमानों	और ज़मीन के	तो निकल जाओ

لَا تَنْفُذُوْنَ	اِلَّا	بِسُلْطٰنٍ ﴿33﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿34﴾
नहीं तुम निकल सकते	मगर	साथ एक क़ुव्वत के	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

يُرْسَلُ	عَلَيْكُمَا	شُوَاظٌ	مِّنْ نَّارٍ ۵	وَّنُحَاسٌ	فَلَا	تَنْتَصِرٰنِ ﴿35﴾ ج
छोड़ दिया जाएगा	तुम दोनों पर	एक शोला	आग का	और धुआं	तो ना	तुम दोनों मुक़ाबला कर सकोगे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَكَانَتْ	السَّمَآءُ	انْشَقَّتِ	فَاِذَا	تُكَذِّبٰنِ (36)	رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ
तो वो हो जाएगा	आसमान	फट जाएगा	फिर जब	तुम दोनों झुठलाओगे	अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी

فَيَوْمَئِذٍ	تُكَذِّبٰنِ (38)	رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	كَالدِّهَانِ (37) ج	وَرْدَةً
तो उस दिन	तुम दोनों झुठलाओगे	अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	मानिंद सुर्ख़ चमड़े के	सुर्ख़

رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	جَآنٌّ (39) ج	وَّلَا	اِنْسٌ	عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ	لَّا يُسْـَٔلُ
अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	कोई जिन्न	और ना	कोई इंसान	अपने गुनाह के बारे में	ना पूछा जाएगा

فَيُؤْخَذُ	بِسِيْمٰهُمْ	الْمُجْرِمُوْنَ	يُعْرَفُ	تُكَذِّبٰنِ (40)
तो वो पकड़े जाऐंगे	अपने चेहरों की अलामत से	मुजरिम	पहचाने जाऐंगे	तुम दोनों झुठलाओगे

هٰذِهٖ	تُكَذِّبٰنِ (42)	رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	وَالْاَقْدَامِ (41) ج	بِالنَّوَاصِيْ
ये है	तुम दोनों झुठलाओगे	अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	और क़दमों से	पेशानी के बालों से

بَيْنَهَا	يَطُوْفُوْنَ	الْمُجْرِمُوْنَ (43)	بِهَا	يُكَذِّبُ	الَّتِيْ	جَهَنَّمُ	وقف لازم
दर्मियान उसके	वो गर्दिश करेंगे	मुजरिम	उसे	झुठलाते थे	वो जो	जहन्नम	

تُكَذِّبٰنِ (45) ع	رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	اٰنٍ (44) ج	حَمِيْمٍ	وَبَيْنَ	ع 2 20 12
तुम दोनों झुठलाओगे	अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	खौलते हुए के	सख़्त गर्म पानी	और दर्मियान	

اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	جَنَّتٰنِ (46) ج	رَبِّهٖ	مَقَامَ	خَافَ	وَلِمَنْ
नेअमतों को	तो कौन सी	दो बाग़ हैं	अपने रब के सामने	खड़ा होने से	डरे	और उसके लिए जो

رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ (48) ج	تُكَذِّبٰنِ (47) لا	رَبِّكُمَا
अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	दोनों बहुत शाख़ों वाले हैं	तुम दोनों झुठलाओगे	अपने रब की

رَبِّكُمَا	اٰلَآءِ	فَبِاَيِّ	تَجْرِيٰنِ (50) ج	عَيْنٰنِ	فِيْهِمَا	تُكَذِّبٰنِ (49)
अपने रब की	नेअमतों को	तो कौन सी	वो दोनों बहते होंगे	दो चश्मे हैं	उन दोनों में	तुम दोनों झुठलाओगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُكَذِّبٰنِ ﴿51﴾	فِيْهِمَا	مِنْ كُلِّ	فَاكِهَةٍ	زَوْجٰنِ ﴿52﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ
तुम दोनों झुठलाओगे	उन दोनों में	हर	फल की	दो क़िस्में हैं	तो कौन सी	नेअमतों की

رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿53﴾	مُتَّكِـِٕيْنَ	عَلٰى فُرُشٍ	بَطَآئِنُهَا
अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	तकिया लगाए हुए होंगे	अपने बिस्तरों पर	अस्तर जिनके

مِنْ اِسْتَبْرَقٍ ؕ	وَجَنَا	الْجَنَّتَيْنِ	دَانٍ ﴿54﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
मोटे रेशम के होंगे	और फल	दोनों बाग़ों के	झुके हुए होंगे	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿55﴾	فِيْهِنَّ	قٰصِرٰتُ	الطَّرْفِ ۙ	لَمْ	يَطْمِثْهُنَّ	اِنْسٌ
तुम दोनों झुठलाओगे	उनमें होंगी	झुकाने वालियां	निगाहों को	नहीं	छुआ उन्हें	किसी इंसान ने

قَبْلَهُمْ	وَلَا	جَآنٌّ ﴿56﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿57﴾ ج	كَاَنَّهُنَّ
उनसे पहले	और ना	किसी जिन्न ने	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	गोया कि वो हैं

الْيَاقُوْتُ	وَالْمَرْجَانُ ﴿58﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿59﴾	هَلْ
याक़ूत	और मरजान	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	नहीं

جَزَآءُ	الْاِحْسَانِ	اِلَّا	الْاِحْسَانُ ﴿60﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
बदला	एहसान का	मगर	एहसान ही	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿61﴾	وَمِنْ دُوْنِهِمَا	جَنَّتٰنِ ﴿62﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
तुम दोनों झुठलाओगे	और इन दोनों के इलावा	दो बाग़ हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿63﴾ لا	مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿64﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿65﴾ ج
तुम दोनों झुठलाओगे	दोनों गहरे सब्ज़ हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

فِيْهِمَا	عَيْنٰنِ	نَضَّاخَتٰنِ ﴿66﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿67﴾
उन दोनों में	दो चश्मे हैं	दोनों जोश मारने वाले	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيهِمَا	فَاكِهَةٌ	وَّنَخْلٌ	وَّرُمَّانٌ ﴿68﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
उन दोनों में	फल हैं	और खजूर के दरख़्त	और अनार हैं	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿69﴾ ج	فِيهِنَّ	خَيْرٰتٌ	حِسَانٌ ﴿70﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
तुम दोनों झुठलाओगे	उन में	नेक औरतें हैं	ख़ूबसूरत	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿71﴾ ج	حُورٌ	مَّقْصُورٰتٌ	فِي الْخِيَامِ ﴿72﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا
तुम दोनों झुठलाओगे	हूरें	ठहराई हुईं	ख़ेमों में	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की

تُكَذِّبٰنِ ﴿73﴾ ج	لَمْ	يَطْمِثْهُنَّ	اِنْسٌ	قَبْلَهُمْ	وَلَا	جَآنٌّ ﴿74﴾ ج	فَبِاَيِّ
तुम दोनों झुठलाओगे	नहीं	छुआ उन्हें	किसी इंसान ने	उनसे पहले	और ना	किसी जिन्न ने	तो कौन सी

اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿75﴾ ج	مُتَّكِـِٕيْنَ	عَلٰى رَفْرَفٍ	خُضْرٍ
नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे	तकिया लगाए हुए होंगे	क़ालीनों पर	सब्ज़

وَّعَبْقَرِيٍّ	حِسَانٍ ﴿76﴾ ج	فَبِاَيِّ	اٰلَآءِ	رَبِّكُمَا	تُكَذِّبٰنِ ﴿77﴾
और नादिर	ख़ूबसूरत	तो कौन सी	नेअमतों को	अपने रब की	तुम दोनों झुठलाओगे

تَبٰرَكَ	اسْمُ	رَبِّكَ	ذِي الْجَلٰلِ	وَالْاِكْرَامِ ﴿78﴾ ع
बहुत बाबरकत है	नाम	आपके रब का	जो बुज़ुर्गी वाला है	और इज़्ज़त वाला है

ع 3 33 13

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ 46 — 56

اٰيَاتُهَا: 96 — رُكُوْعَاتُهَا: 3

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا	وَقَعَتِ	الْوَاقِعَةُ ﴿1﴾ لا	لَيْسَ	لِوَقْعَتِهَا	كَاذِبَةٌ ﴿2﴾ م	خَافِضَةٌ
जब	वाक़ेअ हो जाएगी	वाक़ेअ होने वाली	नहीं है	उसका वाक़ेअ होना	कोई झूठ	पस्त करने वाली है

وقف لازم

رَّافِعَةٌ ﴿3﴾ لا	اِذَا	رُجَّتِ	الْاَرْضُ	رَجًّا ﴿4﴾ لا	وَّبُسَّتِ	الْجِبَالُ
बुलंद करने वाली	जब	हिलाई जाएगी	ज़मीन	सख़्त हिलाया जाना	और रेज़ा-रेज़ा कर दिए जाऐंगे	पहाड़

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَسًّا ۙ ⑤	فَكَانَتْ	هَبَآءً	مُّنْۢبَثًّا ۙ ⑥	وَّكُنْتُمْ	اَزْوَاجًا	ثَلٰثَةً ؕ ⑦
रेज़ा-रेज़ा किए जाना	तो हो जाएँगे वो	गर्द-ओ-ग़ुबार	मुंतशिर	और हो जाओगे तुम	जमाअतों में	तीन

فَاَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۙ	مَآ	اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ؕ ⑧	وَاَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۙ
पस दाएँ हाथ वाले	क्या हैं	दाएँ हाथ वाले	और बाएँ हाथ वाले

مَآ	اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ⑨	وَالسّٰبِقُوْنَ	السّٰبِقُوْنَ ۙ ⑩	اُولٰٓئِكَ
क्या हैं	बाएँ हाथ वाले	और आगे बढ़ने वाले	तो आगे बढ़ने वाले हैं	यही लोग हैं

الْمُقَرَّبُوْنَ ۚ ⑪	فِىْ جَنّٰتِ	النَّعِيْمِ ⑫	ثُلَّةٌ	مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ ⑬	وَقَلِيْلٌ
जो मुक़र्रब हैं	बाग़ात में	नेअमतों वाले	एक बड़ा गिरोह	पहलों में से	और बहुत थोड़े

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ ⑭	عَلٰى سُرُرٍ	مَّوْضُوْنَةٍ ۙ ⑮	مُّتَّكِـِٕيْنَ	عَلَيْهَا
पिछलों में से	तख़्तों पर होंगे	सोने के तारों से बने हुए	तकिया लगाए हुए होंगे	उन पर

مُتَقٰبِلِيْنَ ⑯	يَطُوْفُ	عَلَيْهِمْ	وِلْدَانٌ	مُّخَلَّدُوْنَ ۙ ⑰	بِاَكْوَابٍ
आमने-सामने	गर्दिश कर रहे होंगे	उन पर	लड़के	हमेशा रहने वाले	साथ प्यालों

وَّاَبَارِيْقَ ۙ	وَكَاْسٍ	مِّنْ مَّعِيْنٍ ۙ ⑱	لَّا يُصَدَّعُوْنَ	عَنْهَا	وَلَا
और सुराहियों के	और साग़र	बहती शराब के	ना वो सर दर्द में मुब्तिला किए जाएँगे	उससे	और ना

يُنْزِفُوْنَ ۙ ⑲	وَفَاكِهَةٍ	مِّمَّا	يَتَخَيَّرُوْنَ ۙ ⑳	وَلَحْمِ	طَيْرٍ	مِّمَّا
वो बहकेंगे	और फल	उसमें से जो	वो पसंद करेंगे	और गोश्त	परिंदों का	उसमें से जो

يَشْتَهُوْنَ ؕ ㉑	وَحُوْرٌ	عِيْنٌ ۙ ㉒	كَاَمْثَالِ	اللُّؤْلُؤِ	الْمَكْنُوْنِ ۚ ㉓	جَزَآءً
वो ख़्वाहिश करेंगे	और गोरी औरतें	बड़ी आंखों वाली	जैसे	मोती	छुपे हुए	बदला है

بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ㉔	لَا يَسْمَعُوْنَ	فِيْهَا	لَغْوًا	وَّلَا	تَاْثِيْمًا ۙ ㉕
उसका जो	थे वो	वो अमल करते	ना वो सुनेंगे	उसमें	कोई लग़्व बात	और ना	कोई गुनाह की बात

© HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	قِيْلًا	سَلٰمًا	سَلٰمًا ﴿26﴾	وَ اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙ	مَآ
मगर	कहना	सलाम	सलाम	और दाऐं हाथ वाले	क्या हैं

اَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ﴿27﴾ ؕ	فِيْ سِدْرٍ	مَّخْضُوْدٍ ﴿28﴾ ۙ	وَّ طَلْحٍ	مَّنْضُوْدٍ ﴿29﴾ ۙ	وَّ ظِلٍّ
दाऐं हाथ वाले	बेरियों में	बग़ैर कांटों के	और केलों में	तह ब तह	और सायों में

مَّمْدُوْدٍ ﴿30﴾ ۙ	وَّ مَآءٍ	مَّسْكُوْبٍ ﴿31﴾ ۙ	وَّ فَاكِهَةٍ	كَثِيْرَةٍ ﴿32﴾ ۙ	لَّا
लम्बे	और पानी में	बहते हुए	और फलों में	बकसरत	ना

وَّ لَا	مَمْنُوْعَةٍ ﴿33﴾ ۙ	وَّ فُرُشٍ	مَّرْفُوْعَةٍ ﴿34﴾ ؕ	اِنَّآ	اَنْشَاْنٰهُنَّ
और ना	रोके जाने वाले	और नशिस्तगाहों में	ऊंची	बेशक हम	पैदा किया हमने उन्हें

اِنْشَآءً ﴿35﴾ ۙ	فَجَعَلْنٰهُنَّ	اَبْكَارًا ﴿36﴾ ۙ	عُرُبًا	اَتْرَابًا ﴿37﴾ ۙ
नए सिरे से पैदा करना	तो बना दिया हमने उन्हें	कुंवारियां	ख़ाविंदों की प्यारियां	हम उम्र

ع 1 38 14

لِّاَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿38﴾ ؕ ع	ثُلَّةٌ	مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ﴿39﴾ ۙ	وَ ثُلَّةٌ
दाऐं हाथ वालों के लिए	एक बड़ा गिरोह होगा	पहलों में से	और एक बड़ा गिरोह होगा

مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ﴿40﴾ ؕ	وَ اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۙ	مَآ	اَصْحٰبُ الشِّمَالِ ﴿41﴾ ؕ
पिछलों में से	और बाऐं हाथ वाले	क्या हैं	बाऐं हाथ वाले

فِيْ سَمُوْمٍ	وَّ حَمِيْمٍ ﴿42﴾ ۙ	وَّ ظِلٍّ	مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ﴿43﴾ ۙ	لَّا	بَارِدٍ	وَّ لَا
सख़्त गर्म हवा में	और खौलते पानी में	और साऐ में	सख़्त स्याह धुऐं के	ना	ठंडा	और ना

كَرِيْمٍ ﴿44﴾	اِنَّهُمْ	كَانُوْا	قَبْلَ	ذٰلِكَ	مُتْرَفِيْنَ ﴿45﴾ ۚ	وَ كَانُوْا
उम्दा	बेशक वो	थे वो	पहले	उससे	ख़ुशहाल	और थे वो

يُصِرُّوْنَ	عَلَى الْحِنْثِ	الْعَظِيْمِ ﴿46﴾ ۚ	وَ كَانُوْا	يَقُوْلُوْنَ ۙ	اَئِذَا	مِتْنَا
वो इसरार करते	गुनाह पर	बहुत बड़े	और थे वो	वो कहा करते	क्या जब	मर जाऐंगे हम

وَكُنَّا	تُرَابًا	وَّعِظَامًا	ءَاِنَّا	لَمَبْعُوْثُوْنَ ﴿47﴾	اَوَ	اٰبَآؤُنَا
और हो जाऐंगे हम	मिट्टी	और हड्डियां	क्या बेशक हम	अलबत्ता दोबारा उठाए जाने वाले हैं	क्या भला	आबा ओ अजदाद हमारे

الْاَوَّلُوْنَ ﴿48﴾	قُلْ	اِنَّ	الْاَوَّلِيْنَ	وَالْاٰخِرِيْنَ ﴿49﴾	لَمَجْمُوْعُوْنَ
पहले (भी)	कह दीजिए	बेशक	पहले	और पिछले	अलबत्ता जमा किए जाने वाले हैं

اِلٰى مِيْقَاتِ	يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿50﴾	ثُمَّ	اِنَّكُمْ	اَيُّهَا	الضَّآلُّوْنَ
एक मुक़र्रर वक़्त पर	मालूम दिन के	फिर	बेशक तुम	ऐ	गुमराहो

الْمُكَذِّبُوْنَ ﴿51﴾	لَاٰكِلُوْنَ	مِنْ شَجَرٍ	مِّنْ زَقُّوْمٍ ﴿52﴾	فَمَالِـُٔوْنَ	مِنْهَا
झुठलाने वालो	अलबत्ता खाने वाले हो	एक दरख़्त से	ज़क़्क़ूम के	फिर भरने वाले हो	उससे

الْبُطُوْنَ ﴿53﴾	فَشٰرِبُوْنَ	عَلَيْهِ	مِنَ الْحَمِيْمِ ﴿54﴾	فَشٰرِبُوْنَ	شُرْبَ
पेटों को	फिर पीने वाले हो	उस पर	खौलते पानी से	फिर पीने वाले हो	पीना

الْهِيْمِ ﴿55﴾	هٰذَا	نُزُلُهُمْ	يَوْمَ	الدِّيْنِ ﴿56﴾	نَحْنُ	خَلَقْنٰكُمْ
प्यासे ऊंट (जैसा)	ये होगी	मेहमानी उनकी	दिन	बदले के	हमने	पैदा किया हमने तुम्हें

فَلَوْلَا	تُصَدِّقُوْنَ ﴿57﴾	اَفَرَءَيْتُمْ	مَّا	تُمْنُوْنَ ﴿58﴾	ءَاَنْتُمْ	تَخْلُقُوْنَهٗٓ
पस क्यों नहीं	तुम तस्दीक़ करते	क्या भला देखा तुमने	जो	मनी तुम टपकाते हो	क्या तुम	तुम पैदा करते हो उसे

اَمْ	نَحْنُ	الْخٰلِقُوْنَ ﴿59﴾	نَحْنُ	قَدَّرْنَا	بَيْنَكُمُ	وَمَا
या	हम हैं	पैदा करने वाले	हमने	मुक़द्दर किया हमने	दर्मियान तुम्हारे	और नहीं हैं

نَحْنُ	بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿60﴾	عَلٰٓى	اَنْ	نُّبَدِّلَ	اَمْثَالَكُمْ
हम	आजिज़	इस पर	कि	हम बदल डालें	तुम जैसों को

وَنُنْشِئَكُمْ	فِيْ مَا	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿61﴾	وَلَقَدْ	عَلِمْتُمُ	النَّشْاَةَ
और हम नए सिरे से पैदा कर दें तुम्हें	ऐसी सूरत में जो	नहीं तुम जानते	और अलबत्ता तहक़ीक़	जान लिया तुमने	पैदाइश

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْاُوْلٰى	فَلَوْلَا	تَذَكَّرُوْنَ ﴿62﴾	اَفَرَءَيْتُمْ	مَّا	تَحْرُثُوْنَ ﴿63﴾ ط	ءَاَنْتُمْ
पहली को	तो क्यों नहीं	तुम नसीहत पकड़ते	क्या भला देखा तुमने	जो	तुम बोते हो	क्या तुम

تَزْرَعُوْنَهٗٓ	اَمْ	نَحْنُ	الزّٰرِعُوْنَ ﴿64﴾	لَوْ	نَشَآءُ	لَجَعَلْنٰهُ	حُطَامًا
उगाते हो उसे	या	हम हैं	उगाने वाले	अगर	हम चाहें	अलबत्ता कर दें हम उसे	चूरा-चूरा

فَظَلْتُمْ	تَفَكَّهُوْنَ ﴿65﴾	اِنَّا	لَمُغْرَمُوْنَ ﴿66﴾ لا	بَلْ	نَحْنُ	مَحْرُوْمُوْنَ ﴿67﴾	
तो रह जाओ तुम	तुम बातें बनाते	बेशक हम	अलबत्ता तावान डाले गए हैं	बल्कि	हम तो	महरूम कर दिए गए हैं	

اَفَرَءَيْتُمُ	الْمَآءَ	الَّذِىْ	تَشْرَبُوْنَ ﴿68﴾ ط	ءَاَنْتُمْ	اَنْزَلْتُمُوْهُ	مِنَ الْمُزْنِ
क्या भला देखा तुमने	पानी को	वो जो	तुम पीते हो	क्या तुम	उतारते हो तुम उसे	बादल से

اَمْ	نَحْنُ	الْمُنْزِلُوْنَ ﴿69﴾	لَوْ	نَشَآءُ	جَعَلْنٰهُ	اُجَاجًا	فَلَوْلَا
या	हम हैं	उतारने वाले	अगर	हम चाहें	बना दें हम उसे	सख़्त खारा	पस क्यों नहीं

تَشْكُرُوْنَ ﴿70﴾	اَفَرَءَيْتُمُ	النَّارَ	الَّتِىْ	تُوْرُوْنَ ﴿71﴾ ط	ءَاَنْتُمْ	اَنْشَاْتُمْ
तुम शुक्र करते	क्या फिर देखा तुमने	आग को	वो जो	तुम सुलगाते हो	क्या तुमने	पैदा किया तुमने

شَجَرَتَهَآ	اَمْ	نَحْنُ	الْمُنْشِـُٔوْنَ ﴿72﴾	نَحْنُ	جَعَلْنٰهَا	تَذْكِرَةً
दरख़्त उसका	या	हम हैं	पैदा करने वाले	हमने	बनाया हमने उसे	एक नसीहत

ع 2 36 15 الثالثة

وَّمَتَاعًا	لِّلْمُقْوِيْنَ ﴿73﴾ ج	فَسَبِّحْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ	الْعَظِيْمِ ﴿74﴾ الثلثة	فَلَآ
और फ़ायदे की चीज़	मुसाफ़िरों के लिए	पस तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के	जो निहायत अज़मत वाला है	पस नहीं

اُقْسِمُ	بِمَوٰقِعِ	النُّجُوْمِ ﴿75﴾ لا	وَاِنَّهٗ	لَقَسَمٌ	لَّوْ	تَعْلَمُوْنَ	عَظِيْمٌ ﴿76﴾ لا
मैं क़सम खाता हूं	गिरने की जगहों की	सितारों के	और बेशक वो	अलबत्ता क़सम है	अगर	तुम जानते हो	बहुत बड़ी

اِنَّهٗ	لَقُرْاٰنٌ	كَرِيْمٌ ﴿77﴾ لا	فِىْ كِتٰبٍ	مَّكْنُوْنٍ ﴿78﴾ لا	لَّا يَمَسُّهٗٓ	اِلَّا
बेशक वो	यक़ीनन क़ुरआन है	इज़्ज़त वाला	एक किताब में	महफ़ूज़	नहीं छूते उसे	मगर

INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُطَهَّرُوْنَ ﴿79﴾ ط	تَنْزِيْلٌ	مِّنْ رَّبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿80﴾	اَفَبِهٰذَا	الْحَدِيْثِ
जो बहुत पाक हैं	नाज़िल करदा है	रब की तरफ़ से	तमाम जहानों के	क्या भला इस	बात से

اَنْتُمْ	مُّدْهِنُوْنَ ﴿81﴾ لا	وَتَجْعَلُوْنَ	رِزْقَكُمْ	اَنَّكُمْ	تُكَذِّبُوْنَ ﴿82﴾
तुम	बेपरवाई करने वाले हो	और तुम बनाते हो	हिस्सा अपना	ये कि तुम	तुम झुठलाते हो

فَلَوْ لَآ	اِذَا	بَلَغَتِ	الْحُلْقُوْمَ ﴿83﴾ لا	وَاَنْتُمْ	حِيْنَئِذٍ	تَنْظُرُوْنَ ﴿84﴾ لا
पस क्यों नहीं	जब	पहुंच जाती है (जान)	हलक़ को	और तुम	उस वक़्त	तुम देख रहे होते हो

وَنَحْنُ	اَقْرَبُ	اِلَيْهِ	مِنْكُمْ	وَلٰكِنْ	لَّا	تُبْصِرُوْنَ ﴿85﴾	فَلَوْ لَآ
और हम	ज़्यादा क़रीब होते हैं	उसके	तुम से	और लेकिन	नहीं	तुम देखते	पस क्यों नहीं

اِنْ	كُنْتُمْ	غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ﴿86﴾ لا	تَرْجِعُوْنَهَآ	اِنْ	كُنْتُمْ	صٰدِقِيْنَ ﴿87﴾	
अगर	हो तुम	नहीं बदला दिए जाने वाले	तुम लौटाते उसे	अगर	हो तुम	सच्चे	

فَاَمَّآ	اِنْ	كَانَ	مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿88﴾ لا	فَرَوْحٌ	وَّرَيْحَانٌ ۙ	وَّجَنَّتُ	
पस लेकिन	अगर	है वो	मुक़र्रबीन में से	तो राहत है	और उम्दा रिज़्क़ है	और जन्नत	

نَعِيْمٍ ﴿89﴾	وَاَمَّآ	اِنْ	كَانَ	مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿90﴾ لا	فَسَلٰمٌ	لَّكَ
नेअमतों वाली	और लेकिन	अगर	है वो	दाऐं जानिब वालों में से	तो सलाम है	तेरे लिए

مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ﴿91﴾ ط	وَاَمَّآ	اِنْ	كَانَ	مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ
(कि तुम) दाऐं जानिब वालों में से हो	और लेकिन	अगर	है वो	झुठलाने वालों में से

الضَّآلِّيْنَ ﴿92﴾ لا	فَنُزُلٌ	مِّنْ حَمِيْمٍ ﴿93﴾ لا	وَّتَصْلِيَةُ	جَحِيْمٍ ﴿94﴾	اِنَّ	هٰذَا
गुमराह लोगों में से	तो मेहमानी है	खौलते पानी से	और जलना है	जहन्नम में	बेशक	ये

لَهُوَ	حَقُّ	الْيَقِيْنِ ﴿95﴾ ج	فَسَبِّحْ	بِاسْمِ	رَبِّكَ	الْعَظِيْمِ ﴿96﴾ ع
अलबत्ता वो ही है	जो हक़ है	यक़ीनी	पस तस्बीह कीजिए	नाम की	अपने रब के	जो निहायत अज़मत वाला है

ع 3 22 16

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُكُوْعَاتُهَا: 4 — 94 سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ 57 — آيَاتُهَا: 29

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الْعَزِيْزُ	وَهُوَ	وَالْاَرْضِ ج	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	لِلّٰهِ	سَبَّحَ
बहुत ज़बरदस्त है	और वो	और ज़मीन में है	आसमानों में	उस चीज़ ने जो	अल्लाह के लिए	तस्बीह की है

وَيُمِيْتُ ج	يُحْيٖ	وَالْاَرْضِ ج	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ	لَهٗ	الْحَكِيْمُ (1)
और वो मौत देता है	वो ज़िंदा करता है	और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत	उसी के लिए है	ख़ूब हिक्मत वाला है

وَالْاٰخِرُ	الْاَوَّلُ	هُوَ	قَدِيْرٌ (2)	شَيْءٍ	كُلِّ	عَلٰى	وَهُوَ
और आख़िर है	अव्वल है	वो ही	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	चीज़ के	हर	ऊपर	और वो

الَّذِيْ	هُوَ	عَلِيْمٌ (3)	شَيْءٍ	بِكُلِّ	وَهُوَ	وَالْبَاطِنُ ج	وَالظَّاهِرُ
जिसने	वो ही है	ख़ूब जानने वाला है	चीज़ को	हर	और वो	और बातिन है	और ज़ाहिर है

اسْتَوٰى	ثُمَّ	اَيَّامٍ	فِيْ سِتَّةِ	وَالْاَرْضَ	السَّمٰوٰتِ	خَلَقَ
वो बुलंद हुआ	फिर	दिनों में	छः	और ज़मीन को	आसमानों	पैदा किया

مِنْهَا	يَخْرُجُ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ	يَلِجُ	مَا	يَعْلَمُ	عَلَى الْعَرْشِ ط
उससे	निकलता है	और जो कुछ	ज़मीन में	दाख़िल होता है	जो कुछ	वो जानता है	अर्श पर

مَعَكُمْ	وَهُوَ	فِيْهَا ط	يَعْرُجُ	وَمَا	مِنَ السَّمَآءِ	يَنْزِلُ	وَمَا
तुम्हारे साथ है	और वो	उसमें	चढ़ता है	और जो कुछ	आसमान से	उतरता है	और जो कुछ

لَهٗ	بَصِيْرٌ (4)	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	وَاللّٰهُ	كُنْتُمْ ط	اَيْنَ مَا
उसी के लिए है	ख़ूब देखने वाला है	तुम अमल करते हो	उसे जो	और अल्लाह	हो तुम	जहाँ कहीं

يُوْلِجُ	الْاُمُوْرُ (5)	تُرْجَعُ	وَاِلَى اللّٰهِ	وَالْاَرْضِ ط	السَّمٰوٰتِ	مُلْكُ
वो दाख़िल करता है	सब काम	लौटाए जाते हैं	और अल्लाह ही की तरफ़	और ज़मीन की	आसमानों	बादशाहत

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّيْلَ	فِي النَّهَارِ	وَيُوْلِجُ	النَّهَارَ	فِي الَّيْلِ ؕ	وَهُوَ	عَلِيْمٌۢ
रात को	दिन में	और वो दाख़िल करता है	दिन को	रात में	और वो	ख़ूब जानने वाला है

بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ⑥	اٰمِنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ	وَاَنْفِقُوْا	مِمَّا
सीनों वाले (भेद)	ईमान लाओ	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर	और ख़र्च करो	उससे जो

جَعَلَكُمْ	مُّسْتَخْلَفِيْنَ	فِيْهِ ؕ	فَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْكُمْ	وَاَنْفَقُوْا
उसने बनाया तुम्हें	जानशीन	उस (माल) में	तो वो लोग जो	ईमान लाए	तुम में से	और उन्होंने ख़र्च किया

لَهُمْ	اَجْرٌ	كَبِيْرٌ ⑦	وَمَا	لَكُمْ	لَا تُؤْمِنُوْنَ	بِاللّٰهِ ۚ	وَالرَّسُوْلُ
उनके लिए	अज्र है	बहुत बड़ा	और क्या है	तुम्हें	नहीं तुम ईमान लाते	अल्लाह पर	जब कि रसूल

يَدْعُوْكُمْ	لِتُؤْمِنُوْا	بِرَبِّكُمْ	وَقَدْ	اَخَذَ	مِيْثَاقَكُمْ	اِنْ
वो दावत देता है तुम्हें	कि तुम ईमान लाओ	अपने रब पर	हालांकि तहक़ीक़	उसने लिया है	पुख़्ता अहद तुम से	अगर

كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ⑧	هُوَ	الَّذِيْ	يُنَزِّلُ	عَلٰى عَبْدِهٖٓ	اٰيٰتٍ
हो तुम	ईमान लाने वाले	वो ही है	जो	नाज़िल करता है	अपने बंदे पर	आयात

بَيِّنٰتٍ	لِّيُخْرِجَكُمْ	مِّنَ الظُّلُمٰتِ	اِلَى النُّوْرِ ؕ	وَاِنَّ	اللّٰهَ	بِكُمْ
वाज़ेह	ताकि वो निकाले तुम्हें	अंधेरों से	तरफ़ रोशनी के	और बेशक	अल्लाह	तुम पर

لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ⑨	وَمَا	لَكُمْ	اَلَّا	تُنْفِقُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
अलबत्ता बहुत शफ़क़त करने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और क्या है	तुम्हें	कि नहीं	तुम ख़र्च करते	अल्लाह के रास्ते में

وَلِلّٰهِ	مِيْرَاثُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	لَا	يَسْتَوِيْ	مِنْكُمْ
और अल्लाह ही के लिए है	मीरास	आसमानों की	और ज़मीन की	नहीं	बराबर हो सकता	तुम में से

مَّنْ	اَنْفَقَ	مِنْ قَبْلِ	الْفَتْحِ	وَقٰتَلَ ؕ	اُولٰٓئِكَ	اَعْظَمُ	دَرَجَةً
वो जिसने	ख़र्च किया	पहले	फ़तह के	और जंग की	यही लोग हैं	ज़्यादा बड़े	दर्जे में

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنَ الَّذِيْنَ	اَنْفَقُوْا	مِنْۢ بَعْدُ	وَقٰتَلُوْا ؕ	وَكُلًّا	وَّعَدَ	اللّٰهُ
उनसे जिन्होंने	ख़र्च किया	इसके बाद	और उन्होंने जंग की	और हर एक से	वादा किया	अल्लाह ने

الْحُسْنٰى ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرٌ ⑩ ع	مَنْ ذَا الَّذِيْ	يُقْرِضُ
भलाई का	और अल्लाह	उसकी जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	कौन है जो	क़र्ज़ देगा

ع 1 10 17

اللّٰهَ	قَرْضًا	حَسَنًا	فَيُضٰعِفَهٗ	لَهٗ	وَلَهٗۤ	اَجْرٌ	كَرِيْمٌ ⑪ ج
अल्लाह को	क़र्ज़	अच्छा	फिर वो दोगुना करेगा उसे	उसके लिए	और उसी के लिए है	अजर	इज़्ज़त वाला

يَوْمَ	تَرَى	الْمُؤْمِنِيْنَ	وَالْمُؤْمِنٰتِ	يَسْعٰى	نُوْرُهُمْ	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	
जिस दिन	आप देखेंगे	मोमिन मर्दों को	और मोमिन औरतों को	दौड़ता होगा	नूर उनका	उनके आगे-आगे	

وَبِاَيْمَانِهِمْ	بُشْرٰىكُمُ	الْيَوْمَ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
और उनकी दाएँ जानिब	ख़ुशख़बरी है तुम्हें	आज के दिन	ऐसे बाग़ात की	बहती हैं	जिनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	ذٰلِكَ	هُوَ	الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ⑫ ج	يَوْمَ	يَقُوْلُ
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	यही है	वो	कामयाबी	बहुत बड़ी	जिस दिन	कहेंगे

الْمُنٰفِقُوْنَ	وَالْمُنٰفِقٰتُ	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	انْظُرُوْنَا	نَقْتَبِسْ	
मुनाफ़िक़ मर्द	और मुनाफ़िक़ औरतें	उन्हें जो	ईमान लाए	इंतिज़ार करो हमारा	हम रोशनी हासिल करें	

مِنْ نُّوْرِكُمْ ج	قِيْلَ	ارْجِعُوْا	وَرَآءَكُمْ	فَالْتَمِسُوْا	نُوْرًا ؕ	فَضُرِبَ
तुम्हारे नूर से	कह दिया जाएगा	लौट जाओ	अपने पीछे	फिर तलाश करो	नूर को	तो हाइल कर दी जाएगी

بَيْنَهُمْ	بِسُوْرٍ	لَّهٗ	بَابٌ ؕ	بَاطِنُهٗ	فِيْهِ	الرَّحْمَةُ	وَظَاهِرُهٗ
दर्मियान उनके	एक दीवार	उसका	एक दरवाज़ा होगा	उसकी अंदरूनी जानिब	जिस में	रहमत होगी	और उसकी बैरूनी जानिब

مِنْ قِبَلِهِ	الْعَذَابُ ⑬ ؕ	يُنَادُوْنَهُمْ	اَلَمْ	نَكُنْ	مَّعَكُمْ ؕ	قَالُوْا
उस तरफ़ से	अज़ाब होगा	वो पुकारेंगे उन्हें	क्या ना	थे हम	साथ तुम्हारे	वो कहेंगे

بَلٰى	وَلٰكِنَّكُمْ	فَتَنْتُمْ	اَنْفُسَكُمْ	وَتَرَبَّصْتُمْ	وَارْتَبْتُمْ
क्यों नहीं	और लेकिन तुम	फ़ितने में डाला तुमने	अपने आपको	और इंतिज़ार में रहे तुम	और शक किया तुमने

وَغَرَّتْكُمُ	الْاَمَانِيُّ	حَتّٰى	جَآءَ	اَمْرُ	اللّٰهِ	وَغَرَّكُمْ
और धोखे में डाला तुम्हें	तमन्नाओं ने	यहां तक कि	आ गया	फ़ैसला	अल्लाह का	और धोखे में डाला तुम्हें

بِاللّٰهِ	الْغَرُوْرُ (14)	فَالْيَوْمَ	لَا يُؤْخَذُ	مِنْكُمْ	فِدْيَةٌ	وَّلَا
अल्लाह के बारे में	उस बड़े धोखेबाज़ ने	तो आज	ना लिया जाएगा	तुम से	कोई फ़िदया	और ना

مِنَ الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ط	مَاْوٰىكُمُ	النَّارُ ط	هِيَ	مَوْلٰىكُمْ ط	وَبِئْسَ
उनसे जिन्होंने	कुफ़्र किया	ठिकाना तुम्हारा	आग है	वो ही	दोस्त है तुम्हारी	और कितनी बुरी है

الْمَصِيْرُ (15)	اَلَمْ	يَاْنِ	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَنْ	تَخْشَعَ	قُلُوْبُهُمْ
लौटने की जगह	क्या नहीं	वक़्त आया	उनके लिए जो	ईमान लाए	कि	झुक जाएँ	दिल उनके

لِذِكْرِ	اللّٰهِ	وَمَا	نَزَلَ	مِنَ الْحَقِّ لا	وَلَا	يَكُوْنُوْا	كَالَّذِيْنَ
ज़िक्र के लिए	अल्लाह के	और जो	नाज़िल हुआ	हक़ में से	और ना	वो हो जाएँ	उन लोगों की तरह जो

اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	مِنْ قَبْلُ	فَطَالَ	عَلَيْهِمُ	الْاَمَدُ	فَقَسَتْ	قُلُوْبُهُمْ ط
दिए गए	किताब	इससे क़ब्ल	तो तवील हो गई	उन पर	मुद्दत	तो सख़्त हो गए	दिल उनके

وَكَثِيْرٌ	مِّنْهُمْ	فٰسِقُوْنَ (16)	اِعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يُحْيِ	الْاَرْضَ
और अक्सर	उनमें से	नाफ़रमान हैं	जान लो	बेशक	अल्लाह	वो ज़िंदा करता है	ज़मीन को

بَعْدَ	مَوْتِهَا ط	قَدْ	بَيَّنَّا	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّكُمْ	تَعْقِلُوْنَ (17)
बाद	उसकी मौत के	तहक़ीक़	बयान कर दीं हम ने	तुम्हारे लिए	आयात	ताकि तुम	तुम अक़्ल से काम लो

اِنَّ	الْمُصَّدِّقِيْنَ	وَالْمُصَّدِّقٰتِ	وَاَقْرَضُوا	اللّٰهَ	قَرْضًا	حَسَنًا
बेशक	सदक़ा करने वाले मर्द	और सदक़ा करने वाली औरतें	और जिन्होंने क़र्ज़ दिया	अल्लाह को	क़र्ज़	अच्छा

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يُّضٰعَفُ	لَهُمْ	وَ لَهُمْ	اَجْرٌ	كَرِيْمٌ ⑱	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ
दोगुना कर दिया जाएगा	उनके लिए	और उन्हीं के लिए है	अज्र	इज़्ज़त वाला	और वो जो	ईमान लाए	अल्लाह पर

وَ رُسُلِهٖٓ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الصِّدِّيْقُوْنَ ۖ	وَالشُّهَدَآءُ	عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ
और उसके रसूलों पर	यही लोग हैं	वो	जो सच्चे हैं	और गवाही देने वाले हैं	अपने रब के पास

لَهُمْ	اَجْرُهُمْ	وَ نُوْرُهُمْ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	وَ كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَآ
उन्हीं के लिए है	अजर उनका	और नूर उनका	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	और उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को

اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	الْجَحِيْمِ ⑲ ع	اِعْلَمُوْٓا	اَنَّمَا	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا	لَعِبٌ
यही लोग हैं	साथी	जहन्नम के	जान लो	बेशक	ज़िंदगी	दुनिया की	खेल

ع 2 9 18

وَّ لَهْوٌ	وَّ زِيْنَةٌ	وَّ تَفَاخُرٌۢ	بَيْنَكُمْ	وَ تَكَاثُرٌ	فِي الْاَمْوَالِ
और तमाशा	और ज़ीनत	और बाहम फ़ख़्र करना है	आपस में	और एक दूसरे पर कसरत हासिल करना है	मालों में

وَالْاَوْلَادِ ؕ	كَمَثَلِ	غَيْثٍ	اَعْجَبَ	الْكُفَّارَ	نَبَاتُهٗ
और औलाद में	मानिंद मिसाल	बारिश के है	ख़ुश कर दिया	किसानों को	उसकी नबातात ने

يَهِيْجُ	فَتَرٰىهُ	مُصْفَرًّا	ثُمَّ	يَكُوْنُ	حُطَامًا ؕ
वो ख़ुश्क हो जाती है	फिर आप देखते हैं उसे	कि ज़र्द हो गई	फिर	वो हो जाती है	चूरा-चूरा

عَذَابٌ	شَدِيْدٌ ۙ	وَّ مَغْفِرَةٌ	مِّنَ اللّٰهِ	وَرِضْوَانٌ ؕ	وَمَا	الْحَيٰوةُ
अज़ाब है	सख़्त	और बख़्शिश	अल्लाह की तरफ़ से	और रज़ामंदी	और नहीं	ज़िंदगी

الدُّنْيَآ	اِلَّا	مَتَاعُ	الْغُرُوْرِ ⑳	سَابِقُوْٓا	اِلٰى مَغْفِرَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ
दुनिया की	मगर	सामान	धोखे का	दौड़ो	तरफ़ बख़्शिश के	अपने रब की

وَجَنَّةٍ	عَرْضُهَا	كَعَرْضِ	السَّمَآءِ	وَالْاَرْضِ ۙ	اُعِدَّتْ	لِلَّذِيْنَ
और जन्नत के	चौड़ाई जिसकी	जैसे चौड़ाई	आसमान	और ज़मीन की	वो तैयार की गई है	उनके लिए जो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اٰمَنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرُسُلِهٖ ؕ	ذٰلِكَ	فَضْلُ	اللّٰهِ	يُؤْتِيْهِ	مَنْ
ईमान लाए	अल्लाह पर	और उसके रसूलों पर	ये	फ़ज़्ल है	अल्लाह का	वो अता करता है उसे	जिसे

يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿21﴾	مَآ	اَصَابَ	مِنْ مُّصِيْبَةٍ
वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े	नहीं	पहुंचती	कोई मुसीबत

فِي الْاَرْضِ	وَلَا	فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ	اِلَّا	فِيْ كِتٰبٍ	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ
ज़मीन में	और ना	तुम्हारे नफ़्सों में	मगर	एक किताब में है	इससे पहले	कि

نَّبْرَاَهَا ؕ	اِنَّ	ذٰلِكَ	عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرٌ ﴿22﴾ ۚ	لِّكَيْلَا	تَاْسَوْا	عَلٰى مَا
हम पैदा करें उसे	बेशक	ये	अल्लाह पर	बहुत आसान है	ताकि ना	तुम अफ़सोस करो	उस पर जो

فَاتَكُمْ	وَلَا	تَفْرَحُوْا	بِمَآ	اٰتٰىكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا	يُحِبُّ	كُلَّ
खो जाए तुम से	और ना	तुम इतराओ	उस पर जो	उसने दिया तुम्हें	और अल्लाह	नहीं	वो पसंद करता	हर

مُخْتَالٍ	فَخُوْرِ ﴿23﴾ ۙ	الَّذِيْنَ	يَبْخَلُوْنَ	وَيَاْمُرُوْنَ	النَّاسَ
ख़ुदपसंद	बहुत फ़ख़्र जताने वाले को	वो लोग जो	बुख़्ल करते हैं	और वो हुक्म देते हैं	लोगों को

بِالْبُخْلِ ؕ	وَمَنْ	يَّتَوَلَّ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	الْغَنِيُّ	الْحَمِيْدُ ﴿24﴾
बुख़्ल का	और जो कोई	मुंह फेरता है	तो बेशक	अल्लाह	वो ही है	बहुत बेनियाज़	ख़ूब तारीफ़ वाला

لَقَدْ	اَرْسَلْنَا	رُسُلَنَا	بِالْبَيِّنٰتِ	وَاَنْزَلْنَا	مَعَهُمُ	الْكِتٰبَ
अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	अपने रसूलों को	साथ वाज़ेह निशानियों के	और नाज़िल की हमने	साथ उनके	किताब

وَالْمِيْزَانَ	لِيَقُوْمَ	النَّاسُ	بِالْقِسْطِ ۚ	وَاَنْزَلْنَا	الْحَدِيْدَ	فِيْهِ
और मीज़ान	ताकि क़ायम हों	लोग	इंसाफ़ पर	और उतारा हमने	लोहा	जिसमें

بَاْسٌ	شَدِيْدٌ	وَّمَنَافِعُ	لِلنَّاسِ	وَلِيَعْلَمَ	اللّٰهُ	مَنْ	يَّنْصُرُهٗ
ज़ोर है	सख़्त	और कई फ़ायदे हैं	लोगों के लिए	और ताकि जान ले	अल्लाह	कौन	मदद करता है उसकी

ع 3 6 19

وَرُسُلَهٗ	بِالْغَيْبِ ۚ	اِنَّ	اللّٰهَ	قَوِيٌّ	عَزِيْزٌ ﴿25﴾ ع	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا
और उसके रसूलों की	ग़ायबाना	बेशक	अल्लाह	बहुत कुव्वत वाला है	बहुत ज़बरदस्त है	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने

نُوْحًا	وَّاِبْرٰهِيْمَ	وَجَعَلْنَا	فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا	النُّبُوَّةَ	وَالْكِتٰبَ	فَمِنْهُمْ
नूह	और इब्राहीम को	और रखी हमने	उन दोनों की औलाद में	नुबूव्वत	और किताब	तो कुछ उनमें से

مُّهْتَدٍ ۚ	وَكَثِيْرٌ	مِّنْهُمْ	فٰسِقُوْنَ ﴿26﴾	ثُمَّ	قَفَّيْنَا	عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
हिदायत याफ़्ता हैं	और अक्सर	उनमें से	फ़ासिक़ हैं	फिर	पै दर पै भेजे हमने	उनके आसार पर

بِرُسُلِنَا	وَقَفَّيْنَا	بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ	وَاٰتَيْنٰهُ	الْاِنْجِيْلَ ۙ
अपने रसूल	और पीछे भेजा हमने	ईसा इब्ने मरियम को	और अता की हमने उसे	इंजील

وَجَعَلْنَا	فِيْ قُلُوْبِ	الَّذِيْنَ	اتَّبَعُوْهُ	رَاْفَةً	وَّرَحْمَةً ۗ
और डाल दिया हमने	दिलों में	उन लोगों के जिन्होंने	पैरवी की उसकी	शफ़क़त	और रहमत को

وَرَهْبَانِيَّةَ ۨ	ابْتَدَعُوْهَا	مَا كَتَبْنٰهَا	عَلَيْهِمْ	اِلَّا	ابْتِغَآءَ
और रहबानियत/तर्क कर देना	उन्होंने ईजाद कर लिया उसे	नहीं फ़र्ज़ किया था हमने उसे	उन पर	मगर	हासिल करने को

رِضْوَانِ	اللّٰهِ	فَمَا	رَعَوْهَا	حَقَّ	رِعَايَتِهَا ۚ	فَاٰتَيْنَا
रज़ा	अल्लाह की	तो नहीं	उन्होंने ख़्याल रखा उसका	जैसे हक़ था	उसका ख़्याल रखने का	तो दिया हमने

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مِنْهُمْ	اَجْرَهُمْ ۚ	وَكَثِيْرٌ	مِّنْهُمْ	فٰسِقُوْنَ ﴿27﴾
उन लोगों को जो	ईमान लाए	उनमें से	अजर उनका	और अक्सर	उनमें से	फ़ासिक़ हैं

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاٰمِنُوْا	بِرَسُوْلِهٖ	يُؤْتِكُمْ	كِفْلَيْنِ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	डरो	अल्लाह से	और ईमान लाओ	उसके रसूल पर	वो देगा तुम्हें	दो हिस्से

مِنْ رَّحْمَتِهٖ	وَيَجْعَلْ	لَّكُمْ	نُوْرًا	تَمْشُوْنَ	بِهٖ	وَيَغْفِرْ
अपनी रहमत में से	और वो बना देगा	तुम्हारे लिए	एक नूर	तुम चलोगे	साथ उसके	और वो बख़्श देगा

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿28﴾ ۚ	لِّئَلَّا	يَعْلَمَ	اَهْلُ الْكِتٰبِ
तुम्हें	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	ताकि	जान लें	अहले किताब

اَلَّا	يَقْدِرُوْنَ	عَلٰى شَيْءٍ	مِّنْ فَضْلِ	اللّٰهِ	وَ اَنَّ	الْفَضْلَ
ये कि नहीं	वो क़ुदरत रखते	किसी चीज़ पर	फ़ज़्ल में से	अल्लाह के	और बेशक	फ़ज़्ल

ع 4 4 20

بِيَدِ اللّٰهِ	يُؤْتِيْهِ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿29﴾ ع
अल्लाह के हाथ में है	वो देता है उसे	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े

© AL HUDA INTERNATIONL WELF RE FOUNDATIO